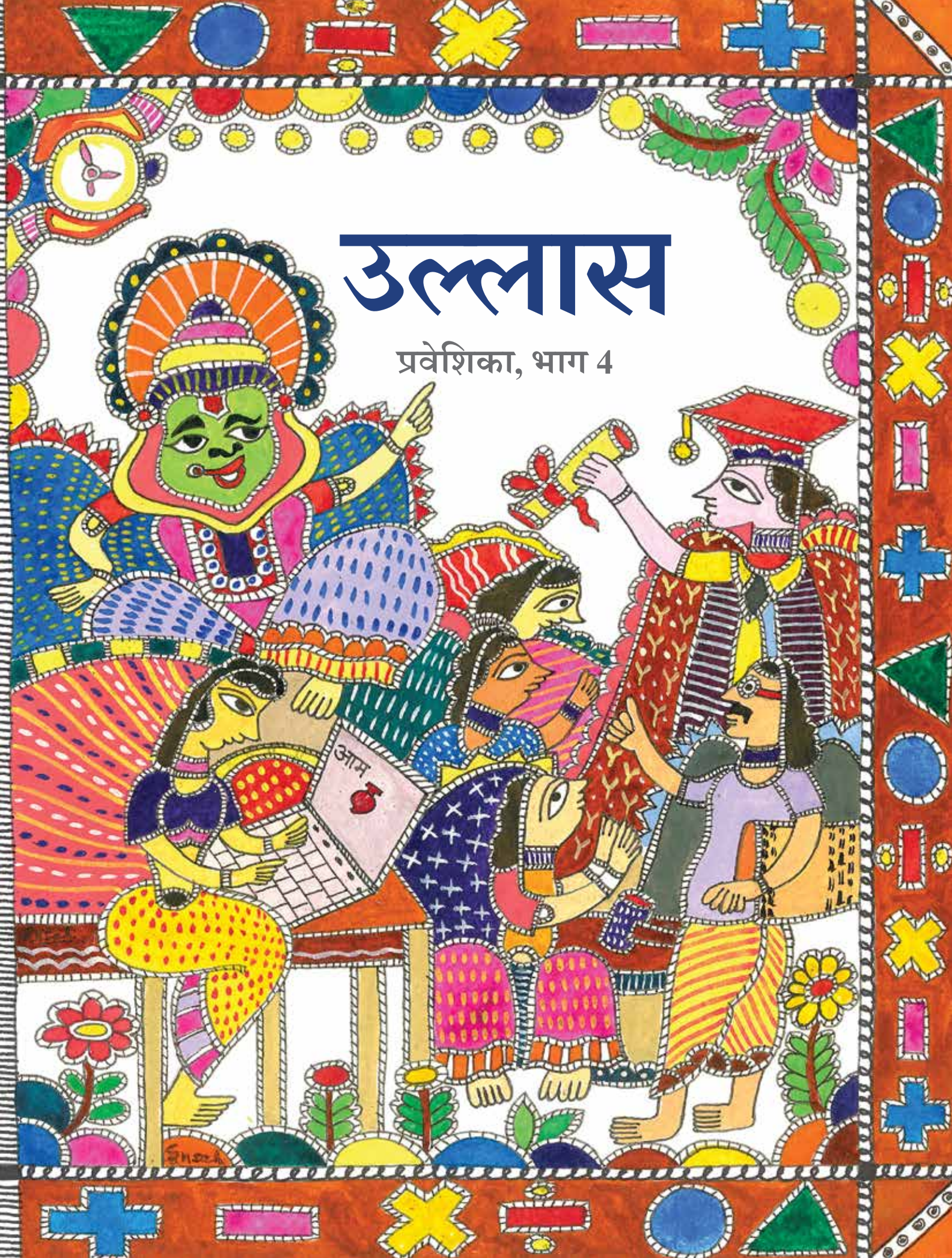


उल्लास

प्रवेशिका, भाग 4





सीख लिया तो आज किया है,
काम ज़रा हटकर।
पेटीएम कर दिया फटाफट,
बार कोड को पढ़कर।

 उत्तराखण्ड साहित्य अकादमी
 राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING




सिखा रही है
बहना भाई को,
लैपटॉप की अब
नई पढ़ाई को।

 उत्तराखण्ड साहित्य अकादमी
 राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING


उल्लास

प्रवेशिका, भाग 4



13277



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

अगस्त 2024 श्रावण 1946

PD 1T M© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2024

₹ 145

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर
पर मुद्रित।सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग
में प्रकाशित तथा दिलप्रीत पब्लिशिंग हाऊस, एफ-198,
विष्णु गार्डन, नई दिल्ली 110018 द्वारा मुद्रित।**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- ❑ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- ❑ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ❑ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस

श्री अरविंद मार्ग

नई दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे

बनाशंकरी III इस्टेज

बेंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस

निकट : धनकल बस स्टॉप पिनहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स

मालीगाँव

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	अनूप कुमार राजपूत
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	अरुण चितकारा
मुख्य संपादक	:	बिज्ञान सुतार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
सहायक संपादक	:	मीनाक्षी
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	दीपक कुमार

आवरण और सज्जा

सच्चिदानंद साह

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पंद्रह वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के उन सभी व्यक्तियों के साक्षर होने के प्रति सरोकार व्यक्त करती है, जो किन्हीं कारणों से साक्षरता और संख्या-ज्ञान अर्जित नहीं कर सके। इस संदर्भ में इस नीति की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए 1 अप्रैल 2022 से भारत सरकार द्वारा ‘उल्लास’ प्रारंभ किया गया है जिसमें वयस्क शिक्षा के सभी पक्ष शामिल हैं। ‘उल्लास’ का उद्देश्य न केवल आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्रदान करना है, बल्कि 21वीं सदी के नागरिकों के लिए आवश्यक अन्य घटकों को भी शामिल करना है, जैसे— महत्वपूर्ण जीवन-कौशल (वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, वाणिज्यिक कौशल, स्वास्थ्य देखभाल और जागरूकता सहित, शिशु देखभाल तथा शिक्षा एवं परिवार कल्याण), व्यावसायिक कौशल विकास (स्थानीय रोजगार प्राप्त करने की दृष्टि से), बुनियादी शिक्षा (प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तर की समकक्षता सहित) और सतत शिक्षा (कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संस्कृति, खेल और मनोरंजन में समग्र प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ-साथ स्थानीय शिक्षार्थियों के लिए रुचि या उपयोग के अन्य विषय, जैसे— महत्वपूर्ण जीवन-कौशल पर अधिक उन्नत सामग्री सहित)। इस प्रकार यह योजना मानव व्यक्तित्व के विकास को समग्रता में देखती है और न्यायसंगत, तर्कशील एवं उत्कृष्ट नागरिकों के निर्माण की दिशा में कार्य करती है।

‘उल्लास’ का अर्थ है— समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ (ULLAS— Understanding of Lifelong Learning for All in Society) और इसका आदर्श वाक्य है— जन-जन साक्षर। ‘नव भारत साक्षरता कार्यक्रम’ के दस्तावेज़ में यह उल्लिखित है कि “2011 की जनगणना के अनुसार देश में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में गैर-साक्षरों की कुल संख्या 25.76 करोड़ (पुरुष 9.08 करोड़, महिला 16.68 करोड़) है। 2009–10 से 2017–18 के दौरान साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत साक्षर के रूप में प्रमाणित व्यक्तियों की 7.64 करोड़ की प्रगति को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान समय में भारत में लगभग 18.12 करोड़ वयस्क गैर-साक्षर हैं।” राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, वर्ष 2030 तक 100 प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करती है और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र की स्थापना की अनुशंसा करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अनेक प्रयास सतत जारी हैं।

यह संभव है कि ‘उल्लास’ में शामिल शिक्षार्थी साक्षर भले ही न हों, लेकिन वे शिक्षित होंगे और अपने जीवन के संघर्ष, चुनौतियों का सामना करने तथा उचित निर्णय लेने में सक्षम भी होंगे। ये शिक्षार्थी अपने जीवन के अलग-अलग संदर्भों में अपनी भाषा या भाषाओं का मौखिक प्रयोग भी करते हैं और गणितीय समझ के साथ अपने-अपने कामों में लेन-देन भी करते हैं। इन्हें केवल पढ़ना-लिखना और संख्या-ज्ञान सीखने की आवश्यकता है जिससे इनका गुणवत्तापूर्ण एवं गरिमामय जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

साक्षरता एक व्यापक अवधारणा है जो केवल अक्षर-ज्ञान या संख्या-ज्ञान तक सीमित नहीं है ‘विभिन्न संदर्भों में विषयों को दृश्य, श्रव्य और डिजिटल सामग्री का उपयोग करके पहचानने, समझने,

रचने, गणना करने और संवाद करने की क्षमता है।” इस रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्रकार्यात्मक है और जीवन को बेहतर तरीके से जीने में सहायक है।

“बुनियादी साक्षरता प्राप्त करना, शिक्षा प्राप्त करना और जीविकोपार्जन का अवसर प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। साक्षरता और बुनियादी शिक्षा, किसी के वैयक्तिक, नागरिक, सामाजिक, आर्थिक और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों की एक नवीन दुनिया खोल देती है। यह नवीन दुनिया व्यक्ति को निजी और व्यावसायिक, दोनों ही स्तरों पर आगे बढ़ाने में मदद करती है।” राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्रालय के ‘नव भारत साक्षरता कार्यक्रम’ के अंतर्गत निरक्षर शिक्षार्थियों के लिए *उल्लास — प्रवेशिका* (चार भागों में) का निर्माण किया गया है। ये प्रवेशिकाएँ समेकित रूप में बनाई गई हैं जिसमें भाषा और गणित दोनों शामिल हैं। विषय सामग्री के रूप में 13 विषय (थीम) तय किए गए हैं जो आमतौर पर हमारे आस-पास दिखाई देते हैं। ये विषय हैं — परिवार और पड़ोस, बातचीत, हमारा रहन-सहन, हमारे आस-पास, खान-पान और सेहत, मतदान, कानूनी जानकारी, मुसीबतें कैसी-कैसी, यात्रा, मनोरंजन, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, समय-समय की बात आदि। भाषा के अंतर्गत इन्हीं विषयों से जुड़ी सार्थक, समग्र और रोचक सामग्री तथा दिन-प्रतिदिन के हिसाब-किताब को लेते हुए, हिंदी भाषा और अंकगणित को पढ़ने-लिखने के अवसर जुटाए गए हैं। शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने और अंकगणित सीखने में मदद के लिए एक मार्गदर्शिका का भी निर्माण किया गया है। यह मार्गदर्शिका शिक्षकों या सुगमकर्ताओं द्वारा उपयोग में लाई जाएगी जो शिक्षार्थियों को सीखने में मदद करेगी। इस मार्गदर्शिका में साक्षरता का व्यापक परिप्रेक्ष्य, भाषा व गणित शिक्षण-बिंदु और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई है। प्रवेशिकाओं और मार्गदर्शिका में दिए गए बिंदु सुझाव के तौर पर हैं। शिक्षार्थियों के स्तर, क्षमता, आवश्यकताओं और स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए इनमें आवश्यकतानुसार बदलाव किया जा सकता है।

उल्लास — प्रवेशिका में शामिल बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान संबंधी शिक्षण-बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए शिक्षार्थियों या स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल या वीडियो कार्यक्रमों का भी निर्माण किया गया है जो दीक्षा मंच (DIKSHA Portal) पर ‘सभी के लिए शिक्षा’ वर्टिकल और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के यूट्यूब चैनल @NCERTOFFICIAL पर उपलब्ध हैं। मार्गदर्शिका और वीडियो कार्यक्रम की सहायता से शिक्षार्थियों को सीखने-सिखाने में मदद मिलेगी।

परिषद्, प्रवेशिकाओं और मार्गदर्शिका के निर्माण में शामिल सभी विषय-विशेषज्ञों और परिषद् के संकाय सदस्यों व परियोजना-कर्मचारियों के अथक परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। साथ ही उन सभी रचनाकारों, संस्थाओं के प्रति भी कृतज्ञ है जिन्होंने अपनी सामग्री सम्मिलित करने हेतु उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इन प्रवेशिकाओं को और अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

नई दिल्ली
फरवरी 2024

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्



प्रस्तावना

शिक्षित होना और साक्षर होना, दो अलग अवधारणाएँ हैं जिन्हें एक बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में देखा और समझा जाना चाहिए। साक्षर होने में किसी भी भाषा में पढ़ने-लिखने की कुशलता सम्मिलित है तो संख्या-ज्ञान में अंक-ज्ञान समाहित है जो मूलतः गणित की संक्रियाओं की ओर संकेत करता है। भाषा और गणित की अवधारणाएँ और विभिन्न संदर्भों में उनका विवेकपूर्ण प्रयोग ही अभीष्ट है। शिक्षित होने का संबंध विवेकशील होने, तर्कशील होने, मानवीय गुणों से परिपूरित होने, समाज के अनुकूल व्यवहार करने एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखने से है जो मानवीय जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। इस प्रकार साक्षर होना, पढ़ना-लिखना और संख्या-ज्ञान से परिचित होना प्रत्येक व्यक्ति की एक बुनियादी आवश्यकता है, जो गरिमामय जीवन जीने में सहायता करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए भारत सरकार द्वारा ‘नव भारत साक्षरता कार्यक्रम’ योजना प्रारंभ की गई है जिसका लोकप्रिय नाम ‘उल्लास’ (ULLAS—Understanding of lifelong Learning for All in Society) है — समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ। इस योजना का उद्देश्य है — 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग वाले वयस्कों को इस रूप में साक्षर करना कि वे एक सशक्त व्यक्तित्व बन सकें और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप ‘नव भारत साक्षरता कार्यक्रम’ में मुख्य रूप से पाँच घटक सम्मिलित हैं — (1) बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान, (2) महत्वपूर्ण जीवन कौशल, (3) बुनियादी शिक्षा, (4) व्यावसायिक कौशल, (5) सतत शिक्षा। असाक्षर शिक्षार्थियों को बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान सिखाने के लिए एक प्रवेशिका का निर्माण किया गया है, जिसका नाम है — *उल्लास — प्रवेशिका*। यह प्रवेशिका चार भागों में है। इस प्रवेशिका में भाषा और गणित दोनों शामिल हैं, जोकि भाषा और गणित संबंधी सीखने के प्रतिफलों पर आधारित है। इस प्रवेशिका में विषय सामग्री के रूप में उन 13 विषयों को शामिल किया गया है, जो किसी भी वयस्क के जीवन से जुड़े हुए हैं। ये विषय हैं — परिवार और पड़ोस, बातचीत, हमारा रहन-सहन, हमारे आस-पास, खान-पान और सेहत, मतदान, कानूनी जानकारी, मुसीबतें कैसी-कैसी, यात्रा, मनोरंजन, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, समय-समय की बात आदि उदाहरण के लिए, पाठ 8 ‘मुसीबतें कैसी-कैसी’ पाठ आपदा प्रबंधन पर आधारित है जिसमें आग, बाढ़, भूकंप, रेल दुर्घटना आदि के बारे में चर्चा की गई है। *उल्लास — प्रवेशिका* में भाषा की कुशलताएँ और गणितीय अवधारणाओं को एक साथ लिया गया है। उदाहरण के लिए, पाठ 3 में ‘हमारा रहन-सहन’ में एक बड़े आकार के चित्र के माध्यम से हिंदी भाषा के परिचित शब्दों की पहचान, शब्द पढ़ना और अक्षर-पहचान (ओ, औ, झ, द, ल, ग, क, य) तथा गणित में 51 से 100 तक की संख्याओं की पहचान करना, पढ़ना और लिखना; इकाई, दहाई और सैंकड़े के समूहों में गिनना; 2 अंकीय संख्याओं के जोड़ और घटा करना सिखाने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार ‘मतदान’ पाठ क्ष, घ, ध, ढ, ढ, अक्षरों एवं 12 और 24 घंटे वाली घड़ी देखना, कैलेंडर, समय-सारणी आदि पर

आधारित है। स्वयंसेवी शिक्षक स्वयं भी सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए अपने आस-पास उपलब्ध अन्य प्रकार की सामग्री का भी प्रयोग कर सकते हैं।

आशा है कि उल्लास के चारों भाग पढ़ना-लिखना और गणित सीखने में असाक्षर शिक्षार्थियों के लिए सिद्ध सहायक होंगे।

सामग्री के संवर्धन के लिए आप सभी के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

उषा शर्मा

प्रोफेसर एवं प्रभारी

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ

रा.शै.अ.प्र.प.



स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें

बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान भारत सरकार की केंद्र प्रायोजित योजना 'उल्लास' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका उद्देश्य 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के असाक्षरों को साक्षर बनाना है। 'उल्लास' के अंतर्गत पढ़ने-लिखने तथा संख्या-ज्ञान के कौशल को उन शिक्षार्थियों तक लेकर जाना है जो किसी कारण से स्कूली शिक्षा से नहीं जुड़ सके या उसे जारी नहीं रख सके। इसलिए संभव है कि सामाजिक चेतना केंद्र अथवा आपके संपर्क में आने वाले असाक्षर शिक्षार्थी पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में अलग-अलग स्तर पर हों।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि ये शिक्षार्थी समझदार हैं और इन्हें जीवन जीने का एक लंबा अनुभव है। वे अपने जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हैं और उन्हें अपने अनुकूल बना लेने की कुशलता भी रखते हैं। यह संभव है कि इनमें से अधिकांश लोग कामकाजी हों जो घर में या बाहर किसी-न-किसी कामकाज में लगे हुए हैं या फिर कोई-न-कोई ज़िम्मेदारी उठा रहे हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि साक्षरता या पढ़ना-लिखना और गणित की समझ उनके दैनिक जीवन को और अधिक सरल बनाए जिसके माध्यम से वे अपने अनुभव और समझ (क्षमता) को और अधिक गहन एवं विस्तृत कर सकें। साथ ही वे इन क्षमताओं का प्रयोग जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में कर सकें। संभवतः इससे उनके आत्मविश्वास में और वृद्धि होगी।

स्वयंसेवी शिक्षक के रूप में हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि —

- साक्षर बनने में हम जिन शिक्षार्थियों की मदद करने जा रहे हैं वे 15 वर्ष अथवा उससे ऊपर की आयु वर्ग के हैं। यह संभव है कि उनके पास हमसे भी अधिक अनुभवों का भंडार हो। उनके अनुभवों का सम्मान करना अपेक्षित है।
- वे अपने रोजमर्रा के कार्य अपने ढंग से कर लेते हैं। उनकी कार्य कुशलता की सराहना करना अपेक्षित है।
- वे तभी पढ़ेंगे जब उन्हें पढ़ना उपयोगी लगेगा। शिक्षार्थियों को पूरी तैयारी से पढ़ाएँ, ताकि वे जो पढ़ रहे हैं उसका लाभ उन्हें मिल सके। इससे हम भी बहुत कुछ नया सीखेंगे व आपका भी आत्मविश्वास बढ़ेगा। अतः हम पूरी तैयारी, मेहनत और आदर के साथ शिक्षार्थियों को पढ़ाएँ।
- **उल्लास** — *प्रवेशिका* हिंदी भाषा और गणित का एकीकृत स्वरूप है। इसके प्रत्येक पाठ में हिंदी भाषा की क्षमताओं और गणितीय क्षमताओं के विकास के लिए पर्याप्त स्थान है।
- शिक्षार्थी हिंदी भाषा सुनने और बोलने में तो सक्षम हैं, लेकिन संभव है कि पढ़ने-लिखने के मौके न मिल पाने के कारण वे पढ़ने-लिखने में किसी प्रकार की कठिनाई महसूस करते हों। यह भी संभव है कि कुछ शिक्षार्थियों को थोड़ा-बहुत अक्षर ज्ञान हो। इसी प्रकार शिक्षार्थी के पास गणित का मौखिक प्रयोग करने की कुशलता और गणना करने के अनौपचारिक मौके तो हों, लेकिन अंकों की पहचान तथा विभिन्न प्रकार की गणितीय समस्याओं को हल करने में उन्हें कठिनाई होती हो।

- पाठों में समग्र चित्र, कहानी, कविता या किसी अन्य रोचक सामग्री के माध्यम से हिंदी भाषा के कुछ नए अक्षरों, शब्दों, पाठ्य-वस्तु को पढ़ना-लिखना सिखाया गया है। इसी पठन-सामग्री के संदर्भ में गणित के अंक, गणना व समस्याएँ हल करना सिखाया गया है। हम चाहें तो शिक्षण बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए अतिरिक्त स्थानीय संसाधन सामग्री का प्रयोग कर सकते हैं। इससे हम शिक्षार्थियों के स्तर, उनकी क्षमता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पठन-सामग्री जुटा सकते हैं।
- **उल्लास — प्रवेशिका** में दिए गए चित्रों का भरपूर प्रयोग करें। चित्र अनुमान लगाकर पढ़ना-लिखना सीखने में सहायक होंगे। चित्रों में एक वस्तु भी हो सकती है और एक पूरी प्रक्रिया या घटना भी, आवश्यकता के अनुसार चित्रों का प्रयोग किया जा सकता है। चित्र शिक्षार्थियों को बातचीत करने और अपने अनुभवों की साझेदारी करने के लिए आमंत्रित करते हैं।
- **उल्लास — प्रवेशिका** के पहले पृष्ठ पर विशेष रूप से शिक्षार्थियों के लिखने के लिए पर्याप्त जगह दी गई है, ताकि वे अपना नाम, पता और संपर्क सूत्र (फ़ोन नंबर) लिखें। शिक्षार्थियों के जीवन में ऐसे मौके बार-बार आते हैं जब उन्हें अपना नाम आदि लिखना होता है। यह कार्य उनके जीवन से बहुत नज़दीक से जुड़ा हुआ है। हो सकता है कि वे अपना नाम न लिख पा रहे हों तो ऐसे शिक्षार्थियों को उनका नाम, पता, फ़ोन नंबर आदि ज़रूरी सूचनाएँ लिखकर दिखाएँ और देखकर लिखने में उनकी मदद करें।
- **उल्लास — प्रवेशिका** के चारों भागों के अंत में हिंदी भाषा की वर्णमाला दी गई है। इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को हिंदी वर्णमाला के अक्षरों से परिचित कराना है, लेकिन प्रारंभ सार्थक सामग्री से ही होगा। एक बार अक्षरों से परिचित हो जाने के बाद वर्णमाला के माध्यम से शिक्षार्थियों से अक्षरों की पहचान करवाई जा सकती है। जो शिक्षार्थी पहले से ही थोड़ा-बहुत ‘अक्षर-ज्ञान’ की कुशलता रखते हैं, वे हिंदी वर्णमाला चार्ट वाले पृष्ठ का प्रयोग पहले भी कर सकते हैं।
- हिंदी वर्णमाला का चार्ट बार-बार देखने से शिक्षार्थियों की अक्षर-पहचान मज़बूत होगी। वे अनुमान लगाकर अक्षरों को पहचानने, पढ़ने और लिखने में इस कुशलता का प्रयोग कर सकते हैं।
- हिंदी भाषा के अक्षरों की पहचान के आस-पास भाषा-खेलों का आयोजन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी वर्णमाला में दिए गए किसी एक अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों को बोलना, एक से अधिक अक्षरों का प्रयोग करते हुए शब्द बनाना और पढ़ना आदि। एक से अधिक अक्षर या मात्रा का प्रयोग करते हुए शब्दों को बोलना, पढ़ना-लिखना जैसे खेल भी सहायक हो सकते हैं।
- हिंदी वर्णमाला के अक्षरों का एक ‘अक्षर-जाल’ के रूप में प्रयोग करते हुए शब्द बनाने का काम भी खेल के रूप में करवाया जा सकता है। इस ‘अक्षर-जाल’ में सीखे हुए अक्षर या मात्राएँ ली जा सकती हैं।
- प्रवेशिका के अंत में दी गई हिंदी वर्णमाला को शिक्षार्थी पढ़ना-लिखना सीखने के दौरान कभी भी देख सकते हैं, पढ़ने-लिखने में उनका प्रयोग कर सकते हैं।

शिक्षार्थियों को पढ़ाते समय ध्यान रखने योग्य बातें —

- **अपने शिक्षार्थी को जानें—** हम अपने शिक्षार्थी के बारे में जानें कि क्या उन्हें बिल्कुल भी पढ़ना-लिखना नहीं आता या वे पहले से कुछ पढ़ना-लिखना जानते हैं या फिर उन्हें केवल अक्षरों की पहचान है या फिर वे केवल अपना नाम ही लिखना जानते हैं। यह भी हो सकता है कि वे संख्याओं का ज्ञान नहीं रखते या गणित के अंक और गणना के औपचारिक तरीके जानते हैं। उनके बारे में, उनकी पसंद-नापसंद, सुख-दुख, परिवार, चिंताएँ, संघर्ष को भी जानें ताकि जब हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रारंभ करें तो उनके जीवन की घटनाओं को भी ध्यान में रखते हुए बातचीत कर सकें। इससे बातों-बातों में उन्हें हौसला मिल सकेगा और वे सशक्त महसूस करेंगे। हमारी आत्मीयता उनके जीवन के अनेक दुखद पक्षों से उनका ध्यान हटा सकती है।
- **अपनी पढ़ने-पढ़ाने की गतिविधियों को मनोरंजक बनाएँ—** आपके आस-पास ऐसी अनेक चीजें होंगी जो पाठ के शिक्षण के लिए उपयोगी हो सकती हैं। पाठ से जुड़ी ऐसी उपलब्ध चीजों; जैसे— कोई अखबार, पत्रिका, विज्ञापन, बिजली का बिल, रेलगाड़ी की टिकट आदि का समुचित प्रयोग करें।
- **शिक्षार्थी को अपनी बात कहने का अवसर दें—** स्वयं अधिक बोलने से बचें। शिक्षार्थी को चर्चा करने, अपने विचार अभिव्यक्त करने के पर्याप्त अवसर दें। हो सकता है हमारी इच्छा बहुत कुछ जानकारी देने की हो, लेकिन हमें याद रखना है कि हमारे शिक्षार्थी पहले से ही बहुत कुछ जानते हैं, बल्कि हम स्वयं उनकी जानकारी और अनुभवों का लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए हम उन्हें धन्यवाद देना न भूलें।
- **अतिरिक्त पठन-सामग्री का इस्तेमाल करें—** उल्लास — प्रवेशिका के प्रत्येक पाठ को पढ़कर उससे जुड़ी विभिन्न प्रकार की अर्थपूर्ण पठन-सामग्री इकट्ठा करें जो रोचक हो और आस-पास आसानी से उपलब्ध हो। इससे पढ़ी जा रही पाठ्य-वस्तु को समझना सरल होगा, शिक्षार्थी उससे जुड़ सकेंगे।
- **शिक्षार्थी के प्रति संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टिकोण रखें—** हम यह न समझें कि हम उम्र में छोटे हैं तो वे हमारी बातों को गंभीरता से नहीं लेंगे। वे आपको भरपूर आदर और प्यार देंगे, क्योंकि हम पढ़ना-लिखना और संख्या बोध सीखने में उनकी सहायता कर रहे हैं। आप बहुत ही समझदार, अनुभवी और संवेदनशील व्यक्ति हैं, फिर भी यह याद दिलाना ज़रूरी है कि उनके कामकाज, वेशभूषा, उच्चारण या फिर उठने-बैठने के तौर-तरीकों पर किसी तरह की नकारात्मक टिप्पणी न करें।
- **शिक्षार्थी की सहूलियत का ध्यान रखें—** पढ़ने-पढ़ाने का समय, स्थान, सीमा आदि का निर्धारण शिक्षार्थी के अनुकूल ही रखें। शिक्षार्थियों के लिए बैठने की सुविधा कुछ इस तरह से हो कि वे आराम से बैठ सकें और जब हम उन्हें अक्षर और शब्द पढ़कर दिखा रहे हों तो वे आसानी से देख भी सकें। दरी, मूड़े इत्यादि का पहले से ही प्रबंध कर लें जिससे अधिक उम्र वाले जिन शिक्षार्थियों के घुटने आदि में दर्द हो, उन्हें घंटा-दो घंटा बैठने में कोई असुविधा न हों।

- **बुनियादी ज़रूरतों का प्रबंध करना**— जिस स्थान पर हम शिक्षार्थियों को पढ़ा रहे हैं, वहाँ पीने के पानी का इंतज़ाम होना ज़रूरी होगा। वहाँ पर्याप्त प्रकाश भी होना चाहिए, ताकि आँखों पर जोर न पड़े।
- **शिक्षार्थी के अनुभव और कुशलता का सम्मान करें**— हमारे शिक्षार्थी को अपने जीवन के बहुत से अनुभव हैं। पढ़ना-लिखना सीखने में इन अनुभवों का भरपूर लाभ उठाया जाए तो आपके लिए पढ़ना-लिखना और सिखाना आसान हो जाएगा। हमारे शिक्षार्थी कामकाजी हैं। वे तरह-तरह के कौशल जानते होंगे। उनके कामकाज की शब्दावली और गणितीय कौशलों का पढ़ने-लिखने और सिखाने में सही तरह से उपयोग किया जा सकता है। पढ़ने-लिखने के संदर्भ में आपकी समझ अधिक है, कामकाज व जीवन के अनुभवों की बात की जाए तो उनकी समझ गहरी है। आपसे अपेक्षा है कि आप उन्हें आदरपूर्वक संबोधित करेंगे। उनकी आयु व उनके अनुभवों को पूर्ण सम्मान देंगे।
- **शिक्षार्थी के सीखने की प्रक्रिया को समझें** — यह हो सकता है कि आपने जो आज सिखाया है, वे दो-तीन दिन बाद भूल जाएँ। यह बहुत ही स्वाभाविक-सी बात है। अतः पिछले सीखे हुए को दोहराना और अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करना ज़रूरी होगा। हर शिक्षार्थी के सीखने की गति और तरीका अलग होगा, इस बात का विशेष ध्यान रखें और उन्हीं की गति और तरीके से सीखने में उनकी मदद करें। सीखने और बदलाव में समय लगता है इसलिए धैर्य बनाए रखें। केंद्र के माहौल को रोचक बनाने के लिए समय-समय पर मनोरंजक खेल, तीज-त्योहारों के अनुसार गीत आदि भी गाएँ। गीत, किस्से-कहानी, अनुभवों की साझेदारी से हम सीखने-सिखाने के बिंदुओं को जोड़ सकते हैं। इससे सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाया जा सकता है। सीखने के लिए एक प्रेरक और आनंददायी माहौल का होना अनिवार्य है।
बुनियादी और संख्या-ज्ञान को सीखने-सिखाने के संदर्भ में आपके सुझावों का स्वागत है।

असीम शुभकामनाएँ!



निर्माण-समिति

अध्यक्ष

दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

परामर्श

अनूप कुमार राजपूत, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

संध्या सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्रीधर श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर शिक्षक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

कामेश्वर राव, प्रोफेसर सेवानिवृत्त, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, मध्य प्रदेश

कृत प्रसाद, प्रधानाचार्य, मध्य विद्यालय, गौढ़ापुर, चंडी, नालंदा, बिहार

गुंजन खुराना, वरिष्ठ परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

तृप्ति उपाध्याय, परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

धर्मप्रकाश, प्रोफेसर सेवानिवृत्त, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

निशात फ़ारूक, पूर्व निदेशक, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रभात, लेखक, जयपुर, राजस्थान

महिमा बंसल, कनिष्ठ परियोजना अध्येता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मालविका राय, शिक्षा सलाहकार, नई दिल्ली

याचना गुप्ता, वरिष्ठ परामर्शदाता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

यासमीन अशरफ़, वरिष्ठ परामर्शदाता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

वर्षा सिंघल, कनिष्ठ परियोजना अध्येता, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शिवा श्रीवास्तव, कनिष्ठ परामर्शदाता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्याम सुशील, लेखक, वसुंधरा एंक्लेव, नई दिल्ली

सत्यवीर सिंह, प्रधानाचार्य, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश

सोनाली, कनिष्ठ परियोजना अध्येता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सोनिका कौशिक, असिस्टेंट प्रोफेसर, जीजस एंड मैरी कॉलेज, नई दिल्ली

समीक्षा

आयुष्मान गोस्वामी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान
उषा शर्मा, प्रोफेसर एवं प्रभारी, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
कंचन देवरारी, अपर निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., देहरादून, उत्तराखंड
चाँदकिरण सलूजा, निदेशक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
प्रशांत पांडेय, सहायक निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., रायपुर, छत्तीसगढ़
संजीव कुमार, पूर्व प्रधानाचार्य, डाइट, आर.के. पुरम, नई दिल्ली
सत्यवीर सिंह, प्रधानाचार्य, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश

सदस्य समन्वयक

उषा शर्मा, प्रोफेसर एवं प्रभारी, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

आभार

परिषद्, उन सभी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशन हेतु अनुमति देने के लिए सुशील शुक्ल, निदेशक, एकतारा, भोपाल (दीवाली के दीये); सुभाष व्याम और दुर्गाबाई व्याम, लोक चित्रकार, भोपाल (ददरिया लोकगीत) और स्वर्गीय निरंकार देव सेवक (ठीक समय पर), श्याम सुशील (आओ बादल), प्रभात (ज्ञानू ज्ञानी ज्ञान और क्षमा बुआ के पत्र), निशात फ़ारूक (मदद मिली तो कैसे और मेरा खाता मेरी शान), स्वयं प्रकाश (हाँजी नाजी), प्रेमपाल शर्मा, (सेवानिवृत्त) कार्यकारी निदेशक, रेलवे बोर्ड (गांधी जी की आत्मकथा से) और आयुष्मान गोस्वामी, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (कहानियाँ) का परिषद् आभार व्यक्त करती है।

इसके साथ ही पुस्तक में चित्रांकन के लिए परिषद् शशि शेठ्ये, नई दिल्ली; सुनीता, लोक चित्रकार (मांडना शैली), जयपुर, राजस्थान; सुभाष व्याम, लोक चित्रकार (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; दुर्गाबाई व्याम, लोक चित्रकार (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; मानसिंह व्याम, लोक चित्रकार (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; प्रशांत सोनी, उदयपुर, राजस्थान; सागर अरणकल्ले, नोएडा, उत्तर प्रदेश; शुभम लखेरा, चंदेरी, मध्य प्रदेश; हबीब अली, ग्वालियर; मध्य प्रदेश; जितेंद्र चौरसिया, देवास, मध्य प्रदेश; हरिओम पाटीदार, धार, मध्य प्रदेश; नीलेश गहलोत, धार, मध्य प्रदेश; तापोशी घोषाल, नई दिल्ली; रुचिन सोनी, नई दिल्ली; मयूख घोष, कोलकाता, पश्चिम बंगाल; सच्चिदानंद साह, सहरसा, बिहार; राधाश्याम राउत, भुवनेश्वर, ओडिशा और श्रेयसी दत्त, मधुबनी, बिहार का विशेष आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, भारत निर्वाचन आयोग, राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल, भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण, राज्य संसाधन केंद्र, इंदौर के प्रति भी आभार प्रकट करती है जिनकी वेबसाइट से उल्लास — प्रवेशिका के निर्माण के लिए उपयोगी सामग्री और चित्र प्राप्त हुए।

परिषद्, उल्लास — प्रवेशिका के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ की बाणी बोरा, वरिष्ठ परामर्शदाता; रोहित नैनवाल, परामर्शदाता; ज्योति तिवारी, कनिष्ठ परियोजना अध्येता; प्रियंका, अयाज़ अहमद अंसारी, डी.टी.पी. ऑपरेटर; योगेश प्रताप सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर; मोहम्मद आतिर, तरुण कुमार नोगिया, ग्राफ़िक डिज़ाइनर, ईशवीन कौर बालूजा, ग्राफ़िक आर्टिस्ट और एनीमेटर, शुभम कुमार, सीनियर ग्राफ़िक डिज़ाइनर और जितेंद्र, टाइपिस्ट की आभारी है। सपना, टाइपिस्ट, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति आभारी है जिनके सहयोग से इस कार्य को पूरा करने में मदद मिली।

परिषद्, इस पुस्तक के संपादन कार्य के लिए प्रकाशन प्रभाग के मोहन शर्मा और अंजू शर्मा, सहायक संपादक (संविदा), पारूल त्यागी, सहायक संपादक (संविदा) और इस पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान के लिए सुरेन्द्र कुमार, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ के प्रभारी और अजय कुमार प्रजापति, सगीर अहमद, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा) की भी आभारी है। इसके साथ ही परिषद् संपादन के लिए मीनाक्षी, फ़्रीलांसर का आभार प्रकट करती है।



अगर आप ...



पढ़ाई एवं परीक्षा



निजी संबंधों



करियर



साथियों के दबाव

को लेकर किसी भी तरह के तनाव, चिंता, परेशानी, उदासी
या उलझन में हैं, तो काउंसलर की मदद लें



कॉल करें
8448440632

राष्ट्रीय टोल-फ्री काउंसलिंग
टेली-हेल्पलाइन
सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक
सप्ताह के प्रत्येक दिन

मनोदर्पण

कोविड-19 के प्रकोप के दौरान और उसके बाद विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य
एवं कल्याण हेतु मनो-सामाजिक सहायता
(आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की एक पहल)



[www.https://manodarpan.education.gov.in](https://manodarpan.education.gov.in)

विषय-सूची

आमुख

iii

स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें

vii

11. मनोरंजन

248–267

- मुफ्त ही मुफ्त
- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना
- 'ददरिया' लोकगीत
- जादुई लालटेन

12. वित्तीय साक्षरता

268–287

- मेरा खाता मेरी शान
- बैंक खाता खुलवाने संबंधित जानकारी का उपयोग करना
- बैंक संबंधित फॉर्म पढ़ना, समझना और भरना (चैक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)
- दान का हिसाब

13. डिजिटल साक्षरता

288–306

- अब राह हुई आसान
- डिजिटल अंकों की पहचान एवं लिखना
- चित्र में प्रदर्शित आँकड़ों की समझ
- मोबाइल फ़ोन से संबंधित दैनिक जीवन की समस्या हल करना।
- मोबाइल की दुनिया



શિક્ષિત બાલિકા
શિક્ષિત સમાજ
સશક્ત બાલિકા
સશક્ત સમાજ
સ્વસ્થ બાલિકા
સ્વસ્થ સમાજ

मेरी किताब

मेरा नाम

मेरा पता

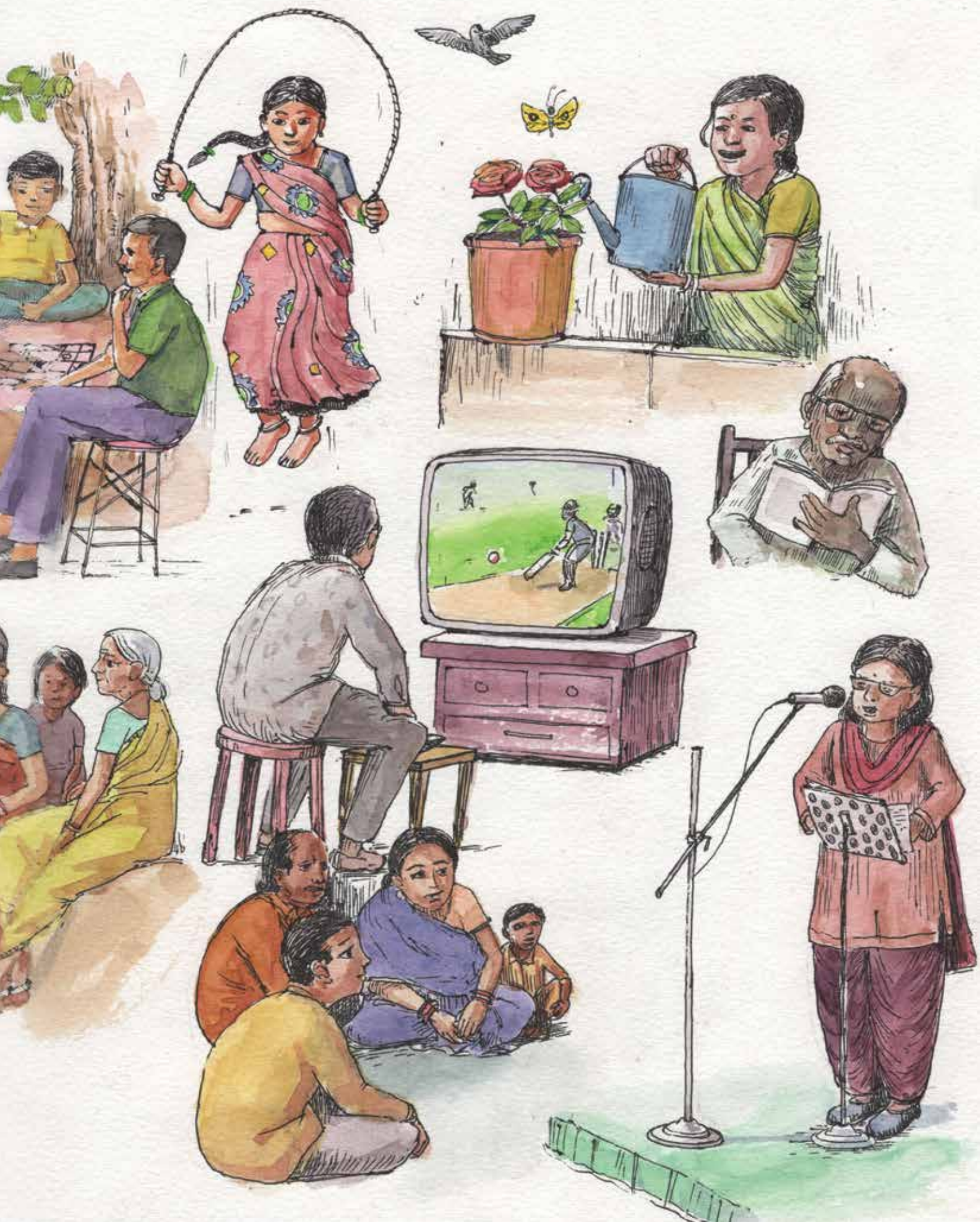
मेरा मोबाइल नंबर

मनोरंजन



बातचीत के लिए

रोजमर्रा के जीवन में मन बहलाने के लिए हम सब गाते-बजाते हैं, कहानियाँ सुनते-सुनाते हैं, फ़िल्में, नाटक आदि देखते हैं। इस चित्र में क्या-क्या हो रहा है? सहभागियों से यह पूछकर इन छवियों के इर्द-गिर्द बात करें। उनके दैनिक जीवन में मनोरंजन के क्या-क्या साधन हैं, इस पर बातचीत करें, और चित्र में गोला लगाएँ।



हम सीखेंगे

- आकृतियों की समझ विकसित करना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ विकसित करना

मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखूभाई का मन नारियल खाने का हुआ। लेकिन घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

“ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा,” उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन बोली, “खाना है तो जाना है।”

भीखूभाई ने कहा, “पैसे खर्च करने पड़ेंगे।”

लाभुबेन बोली, “हाँ, पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।”

भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। मगर नारियल खाने के लिए जी ललचा रहा था। वे लाभुबेन से बोले, “अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ।”

भीखूभाई बाज़ार निकल पड़े। बाज़ार में लोग अपने-अपने कामों में लगे थे। भीखूभाई देखते-पूछते, नारियलवाले के पास पहुँच गए।



“ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?” — भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, “बस, दो रुपये में, काका।”

भीखूभाई ने आँखें फैलाकर कहा, “दो रुपये! दाम बहुत ज़्यादा है, एक रुपये में दे दो।”

नारियलवाले ने कहा, “ना जी ना।”

भीखूभाई बड़बड़ाते हुए बोले, “तो बताओ, एक रुपये में कहाँ मिलेगा?” नारियलवाले ने कहा, “यहाँ से थोड़ी दूर एक मंडी है। शायद वहाँ मिल जाए।”

भीखूभाई मंडी की तरफ़ चल पड़े।

मंडी में लोगों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

भीखूभाई ने माथे का पसीना पोंछा। इधर-उधर देखा। फिर एक नारियलवाले से पूछा, “अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?”



“सिर्फ़ एक रुपया, काका” — नारियलवाले ने जवाब दिया।
 भीखूभाई ने कहा, “मैं इतनी दूर से आया हूँ पचास पैसे काफ़ी हैं।”
 नारियलवाले ने साफ़ मना कर दिया और कहा, “बंदरगाह पर चले जाओ, शायद वहाँ तुम्हें पचास पैसे में मिल जाए।”
 भीखूभाई पैरों को घसीटते हुए चलने लगे। सागर के किनारे एक नाववाला बैठा था।

“अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?” — भीखूभाई ने पूछा।

नाववाले ने कहा,
 “काका, केवल पचास पैसे।” भीखूभाई ने कहा,
 “इतनी दूर से पैदल आया हूँ और तुम कहते हो, पचास



पैसे? मैं तुम्हें पच्चीस पैसे दूँगा।” भीखूभाई झुककर नारियल उठाने ही वाले थे कि नाववाले ने कहा, “नारियल नीचे रख दो।”

फिर उसने भीखूभाई की ओर देखा और बोला, “सस्ते में चाहिए? नारियल के बगीचे में चले जाओ।”

भीखूभाई नारियल के बगीचे में पहुँच गए। बगीचे के माली से नारियल का दाम पूछा। माली ने कहा, “पच्चीस पैसे का एका।”

“पच्चीस पैसे? जूते घिस गए, पैर थक गए और अब पैसे भी देने पड़ेंगे? नारियल मुफ़्त में ही दे दो।” — भीखू भाई ने कहा।

माली ने कहा, “यह रहा पेड़ और वह रहा नारियल। जितने चाहो, तोड़ लो।”

भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए। वे झटपट पेड़ पर चढ़ गए।

उन्होंने सबसे बड़े नारियल को तोड़ने के लिए दोनों हाथ आगे बढ़ाए। “उज़्ज़क!” पैर फिसल गए। भीखूभाई ने एकदम से नारियल को पकड़ लिया। उनके दोनों पैर हवा में झूलते रह गए। वे मदद के लिए चिल्लाने लगे, “अरे भाई! मदद करो,” उन्होंने नीचे खड़े माली से विनती की। माली ने कहा, “वो मेरा काम नहीं, काका। यह तुम्हारे और



तुम्हारे नारियल के बीच का मामला है। पैसे नहीं, खरीदना नहीं, बेचना नहीं और मदद भी नहीं। सब कुछ मुफ्त!”

तभी ऊँट पर सवार एक आदमी वहाँ से गुजरा। भीखूभाई ज़ोर-ज़ोर से बुलाने लगे, “ओ ऊँटवाले! मेरे पैर वापस पेड़ पर टिका दो न, बड़ी मेहरबानी होगी।”

ऊँटवाले ने ऊँट की पीठ पर खड़े होकर भीखूभाई के पैरों को पकड़ लिया। ठीक उसी समय ऊँट को हरे-हरे पत्ते नज़र आए। पत्ते खाने के लालच में ऊँट अपनी जगह से हट गया। बस, वह आदमी ऊँट की पीठ से फिसल गया। अपनी जान बचाने के लिए उसने भीखूभाई के पैरों को कसकर पकड़ लिया। अब दोनों क्या करते? इतने में एक घुड़सवार आया। घुड़सवार को देखकर भीखूभाई ने दुहाई दी, “ओ मेरे भाई! मुझे पेड़ पर वापिस पहुँचा दो।”

“हम्मा” घुड़सवार घोड़े की पीठ पर खड़ा हो गया।





हरी-हरी घास के चक्कर में घोड़ा ज़रा आगे बढ़ गया।
 एक, दो और अब तीन! तीनों नारियल के पेड़ से झूलने लगे।
 घुड़सवार ने पसीना-पसीना होते हुए भीखूभाई से कहा, “काका! काका!
 नारियल कसके पकड़े रहना। मैं आपको सौ रुपये दूँगा।”
 अब ऊँटवाले की बारी थी, “मैं आपको दो सौ रुपये दूँगा।”
 “तीन सौ रुपये!” भीखूभाई का सिर चकरा गया। इतना सारा पैसा! खुशी से
 उन्होंने अपनी दोनों बाँहों को फैलाया... और नारियल गया हाथ से छूटा।
 धड़ाम से तीनों ज़मीन पर गिरे— घुड़सवार, ऊँटवाला और भीखूभाई।
 भीखूभाई अपने आप को सँभाल ही रहे थे कि एक बहुत बड़ा नारियल उनके
 सिर पर आ फूटा। बिल्कुल मुफ्त!

— ममता पण्ड्या

अनुवाद – संध्या राव

(स्रोत— रिमझिम, कक्षा 4, रा.शै.अ.प्र.प.)



■ बातचीत के लिए—

- प्रश्न 1. कहानी में भीखूभाई को कंजूस कहा गया है। क्या वे सचमुच कंजूस थे? यदि हाँ, तो कैसे?
- प्रश्न 2. क्या आप भीखूभाई जैसे किसी व्यक्ति को जानते हैं? उनके बारे में बताइए।
- प्रश्न 3. नीचे दी गई चीज़ों को खरीदते समय आप किन बातों का ध्यान रखते हैं और क्यों?
- (क) दवाई (ख) दाल (ग) गेहूँ (घ) हरी सब्जी

■ पढ़िए और बताइए—

कहानी के आधार पर सही बात पर हाँ (✓) और गलत पर नहीं (×) का निशान लगाइए—

- | | | | | |
|---|-----|-----------------------|------|-----------------------|
| 1. भीखूभाई नारियल खाना चाहते थे। | हाँ | ☐ | नहीं | ☐ |
| 2. भीखूभाई बहुत कंजूस थे। | हाँ | ☐ | नहीं | ☐ |
| 3. मंडी में नारियल का दाम तीन रुपये था। | हाँ | ☐ | नहीं | ☐ |
| 4. माली ने भीखूभाई की मदद की। | हाँ | ☐ | नहीं | ☐ |
| 5. पेड़ पर नारियल से तीन लोग लटके हुए थे। | हाँ | ☐ | नहीं | ☐ |

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों के साथ कंजूस होने और सोच-समझकर पैसा खर्च करने पर चर्चा करें। अक्सर दुकानों पर सेल लगती है और चीज़ों पर छूट मिलती है। क्या यह छूट या सेल वाला सामान उपयोग के योग्य होगा? सेल के बारे में सहभागियों को अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें।



■ पढ़िए, बताइए और लिखिए—

प्रश्न 1. नारियल के बगीचे से लेकर बाज़ार तक आते-आते नारियल के दाम बढ़ जाते हैं। ऐसा क्यों होता है?

प्रश्न 2. कोई सामान बेचते या खरीदते समय आपको कौन-कौन-सी परेशानियाँ आती हैं?

प्रश्न 3. आपके आस-पास के बाज़ार में ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो आप खरीद पाते हैं? ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो आप नहीं खरीद पाते? कारण बताइए—

खरीदी जा सकने वाली चीज़ें	न खरीदी जा सकने वाली चीज़ें	कारण



प्रश्न 4. भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए। आपके जीवन में खुशी के पल कौन-से होते हैं? बताइए और लिखिए—

प्रश्न 5. अपनी-अपनी समझ से वाक्य पूरे कीजिए—

- (क) तभी ऊँट पर _____ एक आदमी वहाँ से गुज़रा।
(ख) भीखूभाई के दोनों _____ हवा में झूलते रह गए।
(ग) उसी समय ऊँट को हरे _____ पत्ते नज़र आए।
(घ) तीनों _____ से ज़मीन पर गिर पड़े।

प्रश्न 6. इस कहानी में संख्याओं का शब्दों में प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है? अंकों में लिखिए, जैसे—

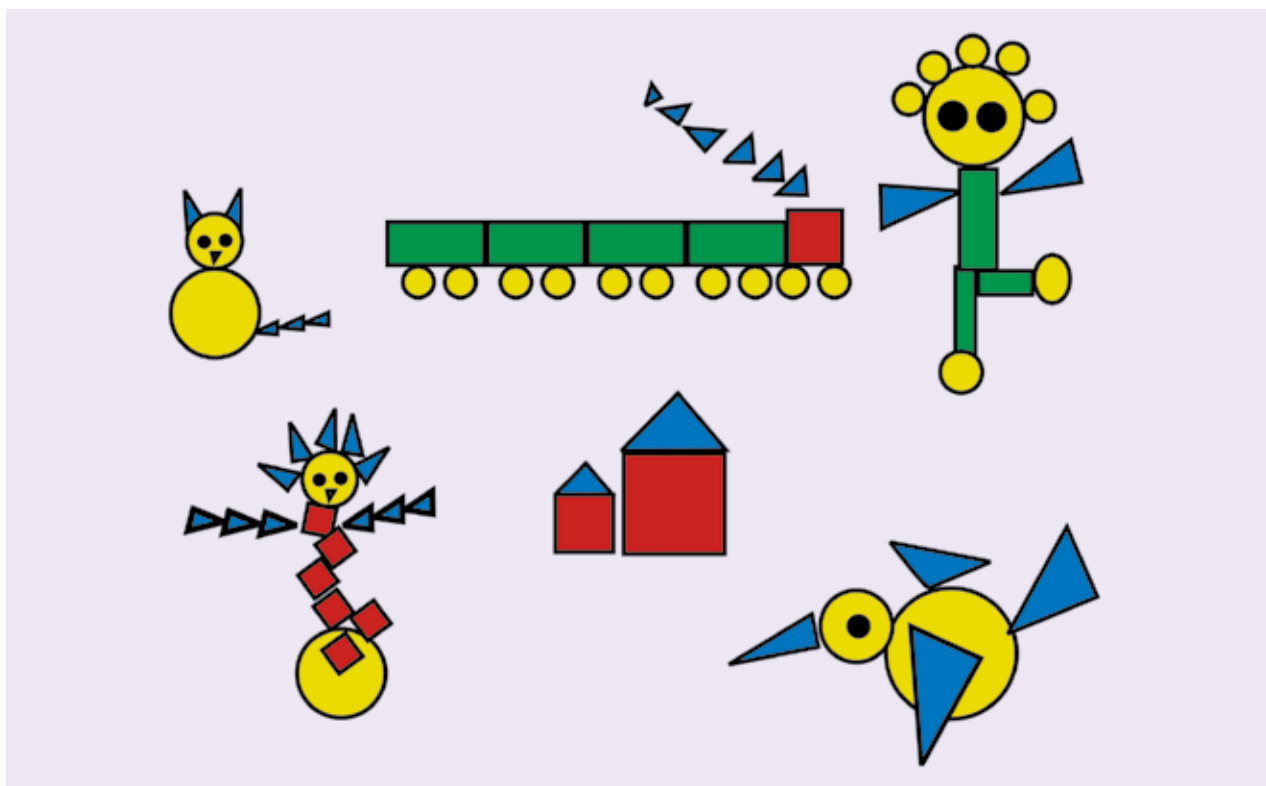
एक नारियल	=	1 नारियल
पचास पैसे	=	50 पैसे
_____	=	_____
_____	=	_____
_____	=	_____

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से महँगाई के बारे में चर्चा करें। पिछले कुछ समय में कौन-कौन-सी चीज़ें महँगी हो गई हैं? ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जिनके महँगे हो जाने पर आपको कोई फ़र्क नहीं पड़ता? एम.आर.पी., रिटेल, थोक आदि शब्दों की समझ पर भी चर्चा करें।



■ तरानी के बनाए हुए चित्र —

तरानी के बनाए चित्र सिनेमाघर की दीवारों पर भी लगे हैं। वह तिकोन (▲), चौकोर (■ या ■) और गोल (●) की मदद से तरह-तरह के चित्र बनाती है।



सीमा गिनकर पता लगाना चाहती है कि तरानी ने कुल कितने गोल, तिकोन और चौकोर से यह चित्र बनाया है। क्या आप सीमा की मदद करेंगे —

कुल तिकोन (▲)



कुल चौकोर (■ या ■)



कुल गोल (●)



शिक्षक-निर्देश— अपने आस-पास एवं दैनिक जीवन में पाई जाने वाली आकृतियों को पहचानने में सहभागियों की मदद करें।

- आप भी त्रिकोण (▲), चौकोर (■ या ■) और गोल (●) की सहायता से कुछ चित्र बनाइए—

- अपने आस-पास की वस्तुओं को देखिए और लिखिए—

गोल	●	साइकिल का पहिया			
त्रिकोण	▲	समोसा			
चौकोर	■	रुमाल			
चौकोर		दरवाज़ा			

■ डिज़ाइन और पैटर्न —

अनोखी ने मेले में तरह-तरह के डिज़ाइन की झंडियों से बनी लड़ियाँ देखीं। अनोखी अपने लिए कुछ झंडियाँ बना रही है। क्या आप झंडियाँ बनाने में अनोखी की सहायता कर सकते हैं?



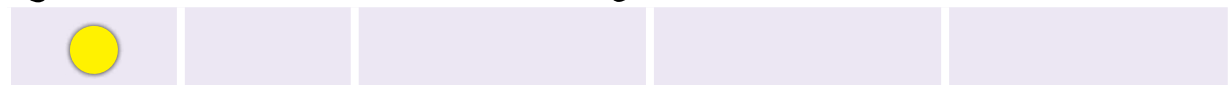
अनोखी ने मेले में से कुछ दरियाँ खरीदीं। इन दरियों के किनारों पर आपको कौन-कौन-सी आकृतियाँ दिख रही हैं? उनके चित्र बनाइए —



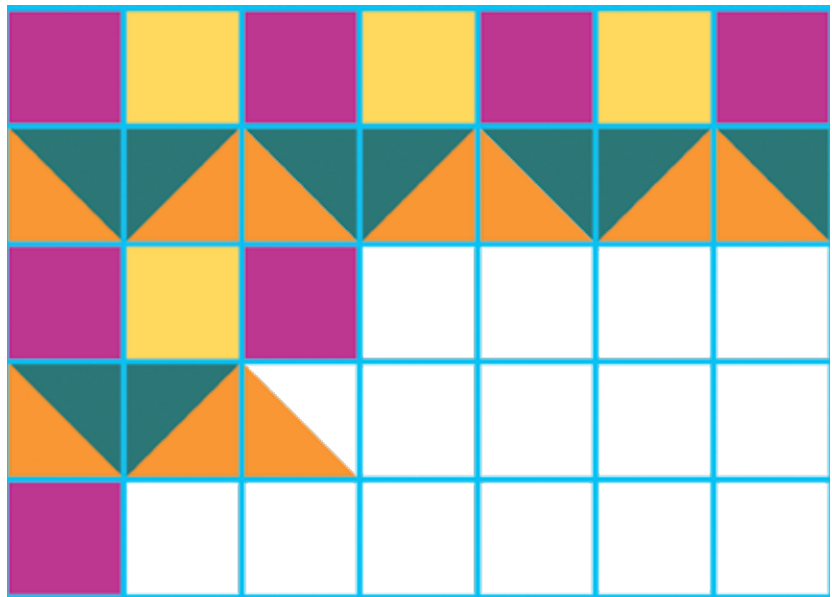
सीधी रेखा से बनने वाली आकृतियाँ —



घुमावदार रेखा से बनने वाली आकृतियाँ —



किसी डिज़ाइन में कुछ आकृतियाँ बार-बार क्यों आती हैं? अनोखी ने झंडियाँ बनाने के बाद अपने बैठने के लिए एक आसन बनाना शुरू किया। क्या आप अनोखी के आसन को पूरा कर सकते हैं?



■ कितने कोने?



■ क्या आप बता सकते हैं कि खाली स्थान में कौन-सी संख्या आएगी।

2	4	6	8			
3	6	9	12			
3	7	11	15			
10	20	30	40			

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से चर्चा करें कि आकृतियाँ सीधी रेखा या घुमावदार रेखा या दोनों तरह की रेखाओं से मिलकर बनती हैं। पैटर्न में कुछ आकृतियों का बार-बार दोहराव होता है।



■ मिलकर पढ़िए—

‘ददरिया’ लोकगीत

यह एक आदिवासी लोकगीत है। यह गीत गोंड समुदाय द्वारा सावन-भादों के मौसम में खेतों में काम करते हुए गाया जाता है। इसकी भाषा में छत्तीसगढ़ी और हिंदी का मिश्रण है। इस ‘ददरिया’ गीत में गूलर के पेड़ वाले खेत में नगरिया हल चलाने वाले और निदैइया— निदाई करने वाली महिला के बीच संवाद चल रहा है। वे दोनों संध्या समय में साथ जाने की बात कर रहे हैं। नगरिया कहता है, “निदैइया, तुम्हारे गाने की आवाज़ नहीं आ रही, साथ में गाना गाओ। हम संध्या समय घर साथ जाएँगे।” निदैइया कहती है, “आम तोड़कर खाने के लिए बुलाया था पर आपने धोखा दिया।” नगरिया कहता है, “साथ में मिलकर गीत गाओ, संध्या समय घर साथ जाएँगे।”

नगरिया – उमरिया, डुमरिया
डुमर वाले खेत तैं
तो निदैइया, मैं त
नगरिया संझा के
बेरा, संघे जाबौ रे
दोस्त ५ ५ ५

निदैइया – गावइया गादी वइसै
गाले उमरिया,
डुमरिया डुमर वाले
खेत तैं तो निदैइया,
मैं तो नगरिया संझा के बेरा,
संघे जाबौ रे दोस्त ५ ५ ५



नगरिया – नई आवै बइया तुम्हारो
 आरो बइसे गाले
 उमरिया, डुमरिया
 डुमर वाले खेत तैं तो
 निदैइया, मैं तो नगरिया
 संझा के बेरा, संघे
 जाबौ रे दोस्त ५ ५ ५



निदैइया – आमाला टोरौं खाहुँच कहि के मोला
 दागा माँ भुलवाए, अहुँच कहिके वैसे
 गाले एइसे गाले उमरिया, डुमरिया
 डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया,
 मैं तो नगरिया संझा के बेरा,
 संघे जाबौ रे दोस्त ५ ५ ५

खेत की मेड़ पर डुमर के पेड़
 लगे हैं, इसलिए उस खेत का
 नाम डुमर वाले खेत पड़ा।

नए शब्दों के अर्थ जानिए—

1. नगरिया – हलवाला (पुरुष), 2. निदैइया – निदाई करने वाली महिला, 3. डुमर – गूलर का पेड़, 4. मोला – मुझे,
5. आमाला – आम, 6. खाहुँच – खाने के लिए, 7. दागा – धोखा, 8. भुलवाए – बुलवाया, 9. आरो – आवाज़

■ मेरे शब्द —

शिक्षक-निर्देश— ‘मनोरंजन’ विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे— ‘शाम’ के लिए ‘संझा’ आदि। सहभागियों के साथ मिलकर गीत, भजन, लोकगीत गाएँ।

■ बातचीत के लिए—

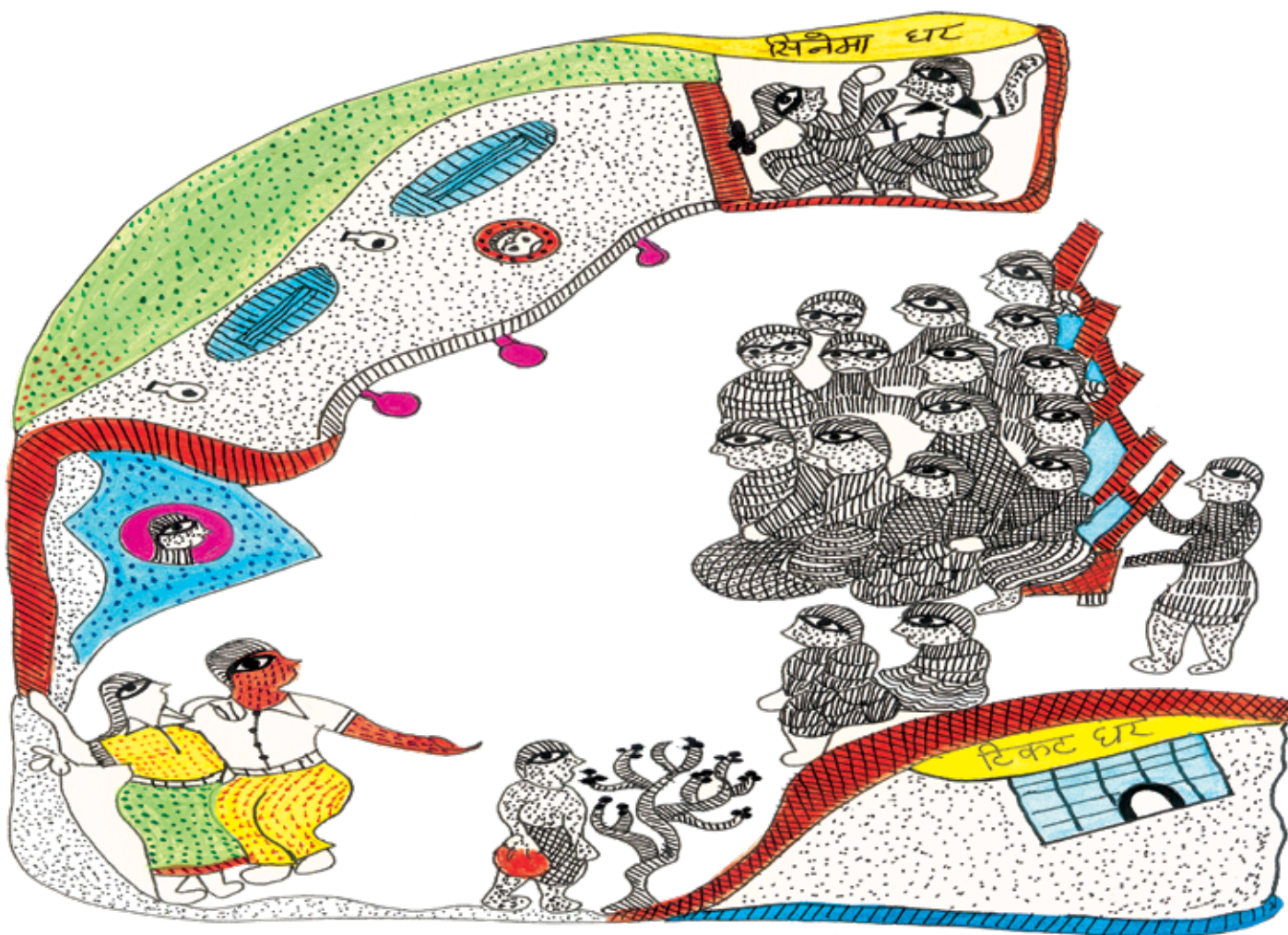
1. आपके यहाँ लोकगीत किन अवसरों पर गाए जाते हैं?
2. क्या आपको कोई लोकगीत याद है? यदि हाँ, तो सुनाइए।



■ मिलकर पढ़िए और बातचीत कीजिए।

जादुई लालटेन

सिनेमा संसार भर में फैला हुआ है। सिनेमा का अपना संसार है। तीन घंटे के शो में हजारों लोग एक साथ रहते हैं। दीन-मजहब, जात-पात, अमीरी-गरीबी, सभी भेद-भाव भूलकर साथ-साथ हँसते-रोते, खुश होते, मज़ा लेते, सोचते-समझते हैं। भारत जैसे बड़े देश में सिनेमा की बहुत बड़ी भूमिका है जो देश और समाज को जोड़ने का काम करता



है। हिंदी में बनी फ़िल्में केवल हिंदी इलाके में ही सराही नहीं जातीं, दक्षिण भारत में भी उन्हें बड़े चाव से देखा जाता है। हिंदी सिनेमा में दक्षिण की गैर-हिंदी फिल्मों की धुनें और गीत-संगीत मशहूर हो रहे हैं। सिनेमा को चलचित्र भी कहते हैं। सिनेमा को जादुई लालटेन भी कहा गया है। अगले सौ साल में इसकी लौ और ऊँची, और मोहक, और साफ़ हो— हम यही कामना करते हैं।

— प्रेम रंजन अनिमेष
(स्रोत— सौ साल का सिनेमा)



हम सीखेंगे

- बैंक खाता खुलवाने से संबंधित जानकारी का उपयोग करना
- बैंक संबंधित फॉर्म पढ़ना, समझना और भरना (चेक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)

मेरा खाता मेरी शान

शरबती ने गुल्लक तोड़ी। ढेरों नोट और सिक्के छनछना कर गिर पड़े। शरबती ने गिने, कुल ₹2573 थे। ये पैसे उसने बड़े जतन से जोड़े थे। अब सवाल था इनकी सँभाल का! सलाह लेने वह लाजू के पास गई। लाजू और शरबती पक्की सहेलियाँ हैं।

लाजू ने सुझाया बैंक में जमा कर दो या डाकघर में खाता खुलवा लो। शरबती भड़की, “बैंक के पचीसों चक्कर लगा चुकी हूँ, किसी ने घास न डाली।” लाजू— “अब ऐसा नहीं है।” काफ़ी बहस हुई।

आखिर शरबती मानी। दोनों सहेलियाँ बैंक पहुँची। वहाँ बोर्ड लगा था।

बोर्ड पढ़कर दोनों मुस्कुराईं। वहाँ और भी जानकारी मिली खाता जन-धन योजना के तहत खुलेगा। शुरुआती राशि के बिना खाता खुलेगा। साथ ही ऋण की सुविधा भी मिलेगी। दुर्घटना

बीमा भी हो जाएगा और समय-समय पर सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता भी सीधे बैंक खाते में ही जमा होगी।



दोनों हैरान थीं और खुश भी। वे जानती थीं कि बैंक में धन सुरक्षित है। ब्याज भी मिलेगा, इतने ढेरों लाभ! वाह, क्या बात है!

अब लाजू और शरबती भी क्यों न खाता खुलवातीं। दोनों ने बचत खाता खुलवाने के लिए फ़ॉर्म भरकर जमा किया। शरबती ने मतदाता पहचान-पत्र और आधार कार्ड की कॉपी लगाई, जिसमें उसके निवास स्थान का पूरा पता लिखा था। लाजू का रुपये कार्ड खो गया था। उसने सरपंच से पत्र लिखवा लिया।

कुछ दिन बाद डाकिया डेबिट रुपये कार्ड (ए.टी.एम.) दे गया। रुपये कार्ड से वे किसी भी बैंक को ए.टी.एम. मशीन से पैसे निकाल सकती थीं।

रुपे कार्ड पाकर दोनों खुश थीं। लाजू बोली, “हमारा तो रुतबा ही बढ़ गया। अब हम भी खाताधारी हैं।”

“मेरा खाता मेरी शान”

— निशात फ़ारूक

- बैंक में खाता खोलें।
- खाता खोलना हुआ बेहद आसान।
- छोटा-सा फ़ॉर्म भरें।
- साथ में कोई पहचान दस्तावेज़ लगाएँ।
- यदि पहले से खाता खुला है तो वह जन-धन योजना से जुड़ सकता है।



■ सही कथनों को मिलाकर वाक्यों को पूरा कीजिए—

- बैंक में खाता
- बैंक में धन
- खाता बिना शुरूआती
- डाकिया रुपये कार्ड
- फ़ॉर्म के साथ
- पहचान-पत्र की कॉपी लगानी है
- राशि के खुलेगा
- दे गया
- खोलना हुआ आसान
- सुरक्षित रहता है

■ पढ़िए, बताइए और लिखिए—

प्रश्न 1. लाजू ने शरबती को पैसा जमा कराने के लिए क्या सुझाव दिया?

प्रश्न 2. क्या आपका भी बैंक में बचत खाता है? अपने बैंक का नाम लिखिए।

प्रश्न 3. क्या आपको कभी बैंक या डाकघर में पैसे के लेन-देन में किसी तरह की परेशानी का सामना करना पड़ा है?

■ सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए—

1. खाता _____ में या _____ में खोलना चाहिए।
2. अपनी _____ के हिसाब से खर्च करना चाहिए।
3. जमा राशि पर _____ मिलता है।
4. बैंक में खाता खोलने के लिए _____, _____
और _____ की ज़रूरत होती है।

■ दिया गया फॉर्म भरिए—

नाम	_____
आयु	_____
लिंग	_____
पता	_____ _____
वार्षिक आय	_____
मोबाइल नंबर	_____

देखिए, पढ़िए और बातचीत कीजिए—

The image shows a State Bank of India Cash Transfer Slip form. It is a blue and white document with multiple sections for filling out details. The top section includes the bank's name in Hindi and English, and the type of account. The middle section is for the depositor's details, including the amount and the date. The bottom section is for the bank's use, including the signature of the depositor and the bank's stamp.

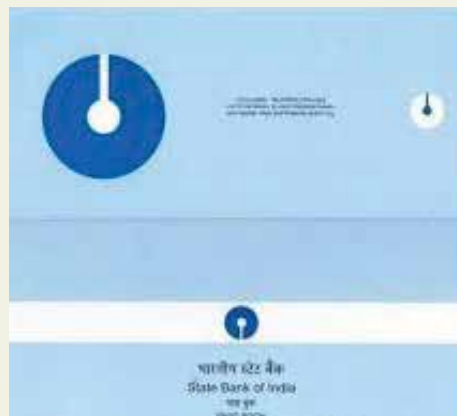
रुपये जमा करने की पर्ची

The image shows a State Bank of India Savings Bank Withdrawal Form. It is a pink and white document with multiple sections for filling out details. The top section includes the bank's name in Hindi and English, and the type of account. The middle section is for the account holder's details, including the amount and the date. The bottom section is for the bank's use, including the signature of the account holder and the bank's stamp.

रुपये निकालने की पर्ची



ए.टी.एम. कार्ड



पासबुक



चेक



20 रुपये का नोट



ए.टी.एम. मशीन

■ बैंक खाते से स्वयं रुपये निकालने अथवा किसी अन्य को भुगतान करने के लिए चेक का उपयोग किया जा सकता है। चित्र को देखकर चेक भरने का अभ्यास कीजिए—

धनराशि शब्दों में प्राप्तकर्ता का नाम (यदि किसी दूसरे व्यक्ति को पैसा देना है) चेक में रकम भरने की तिथि

को या उनके आदेश पर OR ORDER

रुपये RUPEES

अदा करें

VALID FOR 3 MONTHS ONLY

D D M M Y Y Y Y

Prefix: 1515900002

MULTI-CITY CHEQUE Payable at Par at All Branches of SBI

Please sign above

⑈950020⑈ 695002032⑈ 002860⑈ 31

बैंक द्वारा दी गई खाता संख्या

चेक संख्या

खाताधारक के हस्ताक्षर

■ बैंक खाते में रुपये जमा करने के लिए एक जमा पर्ची भरनी पड़ती है। चित्र को देखकर जमा पर्ची को समझिए—

खाताधारक का नाम दिनांक धनराशि शब्दों में शाखा खाता संख्या दिनांक खाताधारक का नाम

खाताधारक का नाम

दिनांक

धनराशि शब्दों में

शाखा

खाता संख्या

दिनांक

खाताधारक का नाम

धनराशि अंकों में

धनराशि शब्दों में

मोबाइल/टेलीफोन नं.

जमाकर्ता के हस्ताक्षर

- जैसे बैंक खाते में रुपये जमा करने के लिए पर्ची भरनी पड़ती है वैसे ही बैंक खाते से रुपये निकालने के लिए भी एक पर्ची भरनी पड़ती है। चित्र को देखकर पर्ची को समझिए—

खाताधारक का नाम

खाता संख्या

दिनांक

शाखा

धनराशि

अंकों में

मोबाइल/टेलीफोन नं.

धनराशि शब्दों में

खाताधारक के हस्ताक्षर

- रवि को ₹7300/- का चेक रुबीना को देना है। चेक भरने में रवि की मदद कीजिए—

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank Of India

केवल 3 महीने के लिए वैध / VALID FOR 3 MONTHS ONLY

PAY TO THE ORDER OF

रुपये RUPEES

₹ 7300

अदा करें

VALID FOR Rs. 1000000/- & UNDER

Prefix: 1515960002

MULTI-CITY CHEQUE Payable at Par at All Branches of SBI

Please sign above

॥ 9500 20 ॥ 69500 203 21: 00 28 60 ॥ 3 1

■ शरबती की पड़ोसी लाजू उससे पूछती है कि बैंक में खाता खोलने से क्या फ़ायदा है?

शरबती— बैंक खाते के कुछ फ़ायदे हैं, जैसे—

- हम अपनी बचत को सुरक्षित रूप से जमा रख सकते हैं।
- जमा राशि पर ब्याज मिलता है।
- ज़रूरत पड़ने पर बैंक जाकर या ए.टी.एम. से जमा राशि निकाल सकते हैं।
- इंटरनेट के माध्यम से बिना पैसे निकाले लेन-देन कर सकते हैं।
- इंटरनेट के माध्यम से बिल भर सकते हैं, रेलगाड़ी के टिकट भी खरीद सकते हैं।

आपका ए.टी.एम. कार्ड बंद हो गया है। हम इसे ठीक कर देंगे। अपना कार्ड नंबर और पिन बताइए।



आप ऐसी स्थिति में क्या करेंगे?

शरबती की डायरी— बैंक का हिसाब

15 फरवरी	जमा किए 2000
18 फरवरी	निकाले 500
	बचे 1500
4 मार्च	जमा किए 1000
	कुल 2500
11 मार्च	निकाले 600
	बचे 1900
17 मार्च	निकाले 700
	बचे 1200

लाजू— कितने पैसे जमा किए और कितने निकाले, यह सब हिसाब कैसे रखते हैं?

शरबती— वैसे तो मैं एक डायरी में लिख लेती हूँ, पर बैंक हमें एक पासबुक देता है, जिसमें बैंक ही हिसाब दर्ज कर देता है।



यदि शरबती ने 4 अप्रैल को 2500 रुपये जमा किए तो बैंक इसे पासबुक में कहाँ दर्ज करेगा? शरबती के खाते में कुल कितने रुपये हो जाएँगे?

शरबती की पासबुक

दिनांक	विवरण	जमा राशि	निकासी	शेष
15.02.2023	नकद	2000		2000
18.02.2023	नकद		500	1500
04.03.2023	नकद	1000		2500
11.03.2023	नकद		600	1900
17.03.2023	नकद		700	1200

शिक्षक-निर्देश— चर्चा करें कि बैंक खाता आसानी से खोला जा सकता है। इसके लिए दो फ़ोटो और वोटर आईडी कार्ड, आधार कार्ड या अन्य कोई फ़ोटो पहचान-पत्र ज़रूरी है। जन-धन योजना में बिना रुपयों के भी खाता खोला जा सकता है। इस प्रकार अन्य राशि जमा करने एवं निकालने पर पासबुक में राशि दर्ज होने की स्थिति तथा शेष राशि पता करने के लिए और प्रश्न पूछें और उन पर चर्चा करें।



■ ए.टी.एम. कार्ड की संक्षिप्त जानकारी

ए.टी.एम. बैंक से पैसा निकालने व जमा करने का एक इलेक्ट्रॉनिक कार्ड होता है जिसकी सहायता से कहीं भी, कभी भी नकद पैसे निकाल सकते हैं और बैंक खाते का लेखा-जोखा भी जान सकते हैं। पैसों के लेन-देन के मामले से जुड़ी किसी समस्या के समाधान के लिए केवल बैंक से ही संपर्क करना चाहिए। ए.टी.एम. कार्ड से पैसे निकालने के लिए ए.टी.एम. मशीन का इस्तेमाल किया जाता है।



याद रखें —

चेक की वैधता अंकित तिथि से तीन महीने तक मान्य होती है।

‘क्रॉस चेक’ केवल खाताधारक के खाते में देय होता है।

कभी किसी से साझा न करें —

1. ओ.टी.पी.
2. पिन
3. सी.वी.वी.
4. खाता संबंधी जानकारी
5. व्यक्तिगत जानकारी

■ के.वाई.सी. (KYC) क्या होता है?

के.वाई.सी. (KYC) (Know Your Customer) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बैंक किसी व्यक्ति की पहचान और पते की पुष्टि करता है। अब आधार कार्ड से भी के.वाई.सी. कर सकते हैं।

के.वाई.सी. (KYC) के लिए ज़रूरी दस्तावेज़ —

1. पैन कार्ड
2. बिजली का बिल
3. आधार कार्ड
4. आवासीय पता



■ पढ़िए और लिखिए—

नीचे वित्तीय साक्षरता और बैंक से जुड़ी कुछ ज़रूरी बातें बताई गई हैं, इन्हें पढ़िए—

वित्तीय साक्षरता— मतलब क्या?

- रुपये-पैसे की बचत एवं खर्च के बीच तालमेल की समझ
- बचत के प्रति जागरूक होना

आप क्या कर सकते हैं?

- आमदनी, खर्च और बचत का लेखा-जोखा रखिए।
- गैर-ज़रूरी खर्चों से बचिए।
- बचत की आदत डालिए।
- बैंक या डाकघर में खाता खोलिए।
- अपनी बचत को सही जगह जमा कीजिए।

वित्तीय साक्षर बनने से हाने वाले लाभ

- आगे आने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए पहले से तैयार रहेंगे।
- खर्चों को काबू में लाएँगे।
- समझदारी से खर्च कर पाएँगे।
- अपनी ज़रूरतों को पहचान सकेंगे।

बैंक में खाता खोलने के लाभ—

- आप अपनी बचत को सुरक्षित रूप से बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।
- जमा राशि पर ब्याज मिलता है।
- ज़रूरत पड़ने पर जमा राशि निकाल सकते हैं।

बैंक में खाता खोलने के लिए इनमें से क्या-क्या चाहिए? सही (✓)

का निशान लगाइए—

- फ़ोटो
- आधार कार्ड
- पैन कार्ड
- वोटर आई डी कार्ड

बैंक में खाता खुल जाने पर आपको बैंक से क्या-क्या मिलेगा?

(✓) का निशान लगाइए—

- चेक बुक
- पासबुक
- डेबिट रुपये कार्ड
- (ए.टी.एम. कार्ड)

■ भीम ऐप (BHIM)

भीम (BHIM) ऐप पैसे के लेन-देन का मोबाइल ऐप है। इसे 'ई-पेमेंट' भी कहते हैं। इसमें आप अपने मोबाइल के ज़रिये पैसे का लेन-देन कर सकते हैं।

- दूर बैठे किसी व्यक्ति को पैसे भेज सकते हैं।
- बच्चों के स्कूल की फ़ीस दे सकते हैं।
- बिजली के बिल का भुगतान कर सकते हैं।
- किराने की दुकान वाले को पैसा दे सकते हैं।
- ऋण का भुगतान कर सकते हैं।



सबसे पहले आपको अपने मोबाइल में भीम ऐप को डाउनलोड और इंस्टॉल करना होगा। इसमें आप हिंदी के साथ-साथ 12 भारतीय भाषाओं में भी काम कर सकते हैं। इस ऐप में आप भारतीय स्टेट बैंक के साथ दूसरे लगभग 30 भारतीय बैंक खातों का इस्तेमाल कर सकते हैं।



(स्रोत— <https://www.npci.org.in/www.npci.ove.in/>
<https://www.npci.org.in/product-overview/bhim-product-overview>)



■ पढ़िए और लिखिए—

‘वित्तीय साक्षरता’ पैसों का सही तरीके से आमदनी और खर्च में तालमेल बैठाना तथा बचत के प्रति जागरूक होना।

■ बैंक में खाता खोलने के लिए निम्नलिखित दस्तावेज ज़रूरी होते हैं—

- फ़ोटो
- आधार कार्ड
- वोटर आईडी कार्ड
- पैन कार्ड
- बिजली का बिल
- आवासीय पता

■ डेबिट कार्ड से बहुत से काम कर सकते हैं। नीचे कुछ कामों की सूची दी जा रही है। आप कुछ कामों के नाम लिखिए—

- | | |
|--------------------------|---------------------|
| • खरीदारी | • किराना |
| • ऑनलाइन खरीदारी | • टिकट बुकिंग |
| • होटल बुकिंग | • ऑनलाइन पेमेंट |
| • स्कूल फ़ीस भर सकते हैं | • पैसे भेज सकते हैं |
| • _____ | • _____ |
| • _____ | • _____ |
| • _____ | • _____ |
| • _____ | • _____ |



इसके अतिरिक्त डेबिट कार्ड से आप क्या-क्या कर सकते हैं? बताइए और लिखिए—

शिक्षक-निर्देश— ‘वित्तीय साक्षरता’ विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे— ‘रुपया’ के लिए ‘रुपैया’ आदि।



■ मिलकर पढ़िए—

दान का हिसाब

एक राजा था। वह बहुत स्वार्थी था। अपने सुख के लिए हजारों खर्च करता। पर अपनी प्रजा के लिए उसकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

एक बार अकाल पड़ा। लोग राजा के पास मदद के लिए गए, “महाराज, अनाज खरीदने के लिए थोड़ा धन दे दीजिए।”



लेकिन राजा ने धन देने से मना कर दिया। उसने कहा, “आज लोग अकाल से परेशान हैं। कल भूकंप आ सकता है। इस तरह सभी की मदद करते-करते राजभंडार खाली हो जाएगा। तब मेरे पास कुछ भी धन नहीं बचेगा।” लोग निराश होकर लौट गए।

समय बीतता गया। अकाल का प्रकोप बढ़ता गया। हजारों लोग भूख से मरने लगे। लोगों ने बार-बार राजा से मदद के लिए कहा। परंतु राजा टस से मस न हुआ।



कुछ दिन बाद एक संन्यासी राजसभामें आया। उसने कहा, “महाराज! बड़ी दूर से आया हूँ। आपका बहुत नाम सुना है। आप मेरी भी इच्छा पूरी कर दें।”

प्रशंसा सुनकर राजा खुश हुआ। बोला, “बताइए, आपको क्या चाहिए?”

संन्यासी ने कहा, “मैं बीस दिन तक मामूली-सी भिक्षा लेना चाहता हूँ। लेकिन मेरी भिक्षा का एक नियम है। पहले दिन जो लेता हूँ, दूसरे दिन उसका दुगना, तीसरे दिन उसका दुगना, चौथे दिन तीसरे दिन का दुगना। इसी तरह रोज़ दुगना लेता जाता हूँ।”

राजा बोला, “आप पहले दिन कितना लेंगे?”

संन्यासी ने कहा, “केवल एक रुपया।” राजा खुश हो गया। उसने आदेश दिया। राजकोष से संन्यासी के कहे अनुसार भिक्षा दी जाए।

15 दिन बीत गए तो राजभंडारी चौंका। दान में बहुत धन निकला जा रहा था। उसने हिसाब लगाया कि 20 दिन में 10 लाख 48 हजार 575 रुपए देने होंगे। उसने यह हिसाब राजा को बताया। हिसाब देखकर राजा बेहोश हो गया।



दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपये
तीसरा दिन	4 रुपये
चौथा दिन	8 रुपये
पाँचवाँ दिन	16 रुपये
छठा दिन	32 रुपये
सातवाँ दिन	64 रुपये
आठवाँ दिन	128 रुपये
नवाँ दिन	256 रुपये
दसवाँ दिन	512 रुपये
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपये
बारहवाँ दिन	2048 रुपये
तेरहवाँ दिन	4096 रुपये
चौदहवाँ दिन	8192 रुपये
पंद्रहवाँ दिन	16384 रुपये
सोलहवाँ दिन	32768 रुपये
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपये
अठारहवाँ दिन	131072 रुपये
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपये
बीसवाँ दिन	524288 रुपये
कुल	1048575 रुपये

संन्यासी को बुलाया गया। राजा ने संन्यासी से भिक्षा की रकम कम करने की विनती की।

संन्यासी ने कहा, “लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल 50 हजार रुपये चाहिए। यही मेरी भिक्षा होगी!”

राजा बहुत गिड़गिड़ाया। उसने कहा, “रकम कम कर दीजिए।” लेकिन संन्यासी वचन पर डटा रहा। लाचार होकर राजा को उसे 50 हजार रुपये देने पड़े।

पूरे देश में खबर फैल गई कि राजकोष से 50 हजार रुपये राहत के लिए दिए गए हैं। सभी ने कहा, “हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।”

— सुकुमार राय

(स्रोत— रिमझिम, कक्षा 4, रा.शै.अ.प्र.प.)



■ सोचिए और बताइए—

नीचे दिए गए वाक्यों का इस्तेमाल आप कब करते हैं? छाँटकर लिखिए—

पैरों तले ज़मीन खिसकना	दिल बाग-बाग होना	दिल धक् से रह जाना	लाल-पीला होना
घी के दीये जलाना	खून खौलना	गद्गद् होना	आपे से बाहर होना

जब बहुत खुशी होती है	जब बहुत परेशानी होती है	जब बहुत गुस्सा आता है



हम सीखेंगे

- डिजिटल अंकों की पहचान एवं लिखना
- चित्र में प्रदर्शित आँकड़ों की समझ
- दैनिक जीवन से संबंधित समस्याओं को मोबाइल फोन से हल करना

अब राह हुई आसान

महिपाल जामनगर में रहता है। वह खेती करता है। उसके पास करीब 8.2 एकड़ ज़मीन है। उसके तीन बच्चे हैं— एक बेटा और दो बेटियाँ। तीनों बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं। महिपाल केवल छठी कक्षा तक पढ़ा है। वह चाहता है कि उसके बच्चे खूब पढ़ें। उसने उनकी पढ़ाई के लिए ऋण लेकर एक मोबाइल फ़ोन भी खरीदा।

बच्चों को पालने के लिए महिपाल और उसकी पत्नी बहुत मेहनत करते हैं। उन्होंने पिछले खरीफ़ में धान की खेती की और रबी में मकई की। महिपाल ने खेती शुरू करने के लिए पूरी योजना बनाई थी कि कितने पैसे चाहिए होंगे;



जैसे— मक्के के बीज खरीदना, खेत के लिए खाद, यूरिया आदि। उसे सिंचाई के लिए बार-बार पंप किराये पर लेने के लिए भी पैसे चाहिए थे। उसे दो मजदूरों को भी काम पर रखना था। महिपाल ने एक बजट बनाया। उसके पास इन सबके लिए उतने पैसे नहीं हैं, जितनी ज़रूरत है। महिपाल और उसकी पत्नी ने फ़ैसला किया कि वे अपनी पिछले साल की बचत को इसमें लगा देंगे और बची हुई रकम के लिए ग्रामीण बैंक से ऋण ले लेंगे। महिपाल इतने पैसे लगाने



स्रोत— https://play.google.com/store/apps/details?id=in.farmguide.farmerapp.central&hl=en_IN&gl=US



स्रोत— <https://mkisan.gov.in/>



में डर रहा था, क्योंकि उसे बच्चों की पढ़ाई और घर खर्च के साथ मोबाइल फ़ोन का ऋण भी चुकाना था।

महिपाल बहुत समझदार है। उसने मोबाइल फोन का इस्तेमाल बच्चों की पढ़ाई के लिए भी किया। साथ ही मोबाइल की मदद से भारत सरकार की नई कृषि पद्धतियों और योजनाओं के बारे में भी जाना। इसके लिए उसने 'ई-चौपाल, डिजिटल मंडी इंडिया, एम-किसान' आदि ऐप भी मोबाइल में डाउनलोड किए।

रोज़ शाम को महिपाल और उसके बच्चे मोबाइल फोन खोल लेते थे। वे देखते थे कि स्थानीय प्रशासन द्वारा दी जा रही सहायता से वे अपनी खेती में कैसे सुधार कर सकते हैं।



स्रोत— <https://play.google.com/store/apps/details?id=com.itcinfotech.echoupal&hl=zu&gl=US>

महिपाल 'एम किसान' ऐप से जुड़ गया। यहाँ पर मौसम, बीज और खाद के दाम, अपेक्षित बिक्री मूल्य आदि से जुड़ी सलाह और सूचना मिलती रहती है। इससे उसने हिसाब लगाया कि ये सब खरीदने में



उसे कितना खर्च करना चाहिए। अब महिपाल घर बैठे ही मोबाइल से सारी जानकारी ले लेता था।

मौसम की अनियमितता को देखते हुए महिपाल ने 'क्रॉप-इंश्योरेंस मोबाइल ऐप्लिकेशन' पर भी पंजीकरण कर दिया जिससे उसे कम-से-कम कीमत पर अपनी फसल का बीमा करने में सहायता मिली। किसी भी स्थिति में फसल खराब होने पर उसे अधिकांश पैसा वापिस मिल जाएगा। अन्य किसानों से बात करने और नए विचारों को जानने के लिए वह ई-चौपाल पर भी जुड़ा।

एक दिन वह सिंचाई के लिए पंप किराये पर लेने ही वाला था कि उसे 'एम किसान' ऐप से पता चला कि अगले हफ्ते भारी बारिश होने वाली है। इस जानकारी से उसने पंप किराये पर नहीं लिया और अपनी समझदारी से पैसों की बचत भी की।

कटाई के समय मोबाइल फोन पर एक चेतावनी आई कि अगले कुछ दिनों में जिले में चक्रवात आ सकता है। इससे पहले कि फसल आँधी और बारिश से खराब होती, महिपाल ने और मजदूर किराये पर लगाकर अपनी फसल की कटाई कर ली।

महिपाल ने अपनी फसल को बचाने और इस मौसम की अच्छी पैदावार के लिए बहुत समझदारी से फ़ैसले लिए। यह सब मोबाइल पर मौजूद ऐप की मदद से हुआ, जहाँ वह जानकारों और स्थानीय अधिकारियों से सलाह लेता था।

मोबाइल फ़ोन की मदद से बच्चों ने अच्छे से पढ़ाई भी की। साथ ही महिपाल ने इस साल अच्छी फ़सल से अच्छी कमाई भी की। उसने मोबाइल का ऋण भी चुकाया और कुछ पैसा बच्चों की आगे की पढ़ाई के लिए बैंक में भी जमा किया।



■ बातचीत के लिए —

- प्रश्न 1. महिपाल ने रबी में कौन-सी फसल बोई?
- प्रश्न 2. महिपाल को बीज और खाद की उचित कीमत के बारे में कैसे पता चला?
- प्रश्न 3. क्या महिपाल ने बरसात से पहले सिंचाई पंप किराये पर न लेकर गलती की?
- प्रश्न 4. महिपाल को जानकारों से मौसम, बिक्री व खरीद मूल्य आदि की जानकारी कैसे मिलती थी?
- प्रश्न 5. दो ऐप के नाम बताइए, जिनका उपयोग किसान अपनी खेती में सुधार लाने और अच्छी बेहतर फसल प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं।

■ मेरे शब्द —

शिक्षक-निर्देश — ‘डिजिटल साक्षरता’ विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से मोबाइल के दैनिक प्रयोग पर बातचीत कीजिए। मोबाइल के विभिन्न प्रयोगों पर चर्चा कीजिए।

डिजिटल संख्याएँ

आप पैसा निकालने बैंक जाते हैं। बैंक में आपको एक टोकन दिया जाता है। आपका नंबर बारह है जो खिड़की पर लगी मशीन में इस (जैसा चिह्न में दिखाया गया है) प्रकार दिखता है।

12

रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी संख्या, प्लेटफॉर्म नंबर देखने के लिए भी ऐसे ही अंकों का इस्तेमाल किया जाता है—

गाड़ी संख्या	गाड़ी का नाम	प्लेटफॉर्म नंबर
12398	महाबोधि एक्सप्रेस	8
12454	राजधानी एक्सप्रेस	5

इसी तरह के अंक मंडी में भाव देखने, तापमान देखने, मेट्रो स्टेशन आदि पर लगी स्क्रीन पर दिखाई देते हैं।

आपके कैलकुलेटर की स्क्रीन पर भी इसी तरह के अंक होते हैं। अंकों की बनावट को पहचानना आपके लिए ज़रूरी है।

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9

स्क्रीन पर इसी बनावट के अंक दिखते हैं। यदि आपका टोकन नंबर 123 है तो बताइए वह स्क्रीन पर किस तरह दिखेगा—

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों की पहचान डिजिटल अंकों से कराएँ। उन्हें ऐसे अवसर दिए जाएँ, जिनमें डिजिटल अंकों का पढ़ना एवं लिखना शामिल हो।



आप अपनी फसलों या गेहूँ की पैदावार की तुलना दूसरों की पैदावार से करते हैं या पिछले वर्ष की पैदावार से करते हैं, तो ऐसी तुलना करने के लिए चित्र बहुत उपयोगी होते हैं।

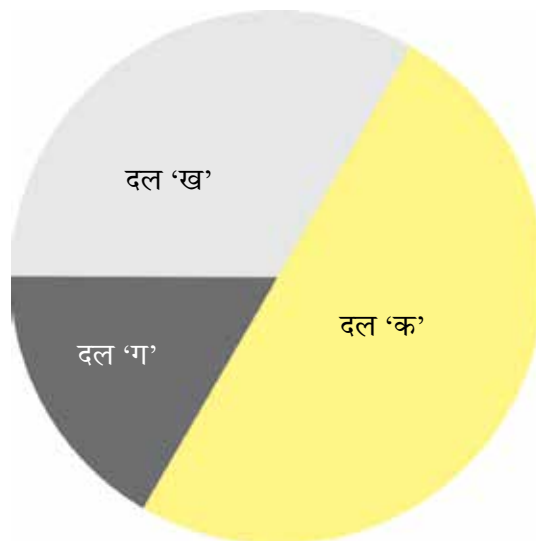
गीता— “अरे वाह! मेरे पास एक बोरी गेहूँ
ज्यादा हैं।”

देखकर ही गीता को कैसे पता लगा?

गीता को पता करना था कि किस दल की सरकार बनने वाली है। गीता टी.वी. पर चुनावी नतीजों से जुड़ी खबरें देख रही है। जिस दिन चुनाव के नतीजे आते हैं तो टी.वी. पर इस तरह के चित्र बने होते हैं जिससे यह समझना आसान हो जाता है कि कौन-से दल को ज्यादा सीटें मिली हैं।



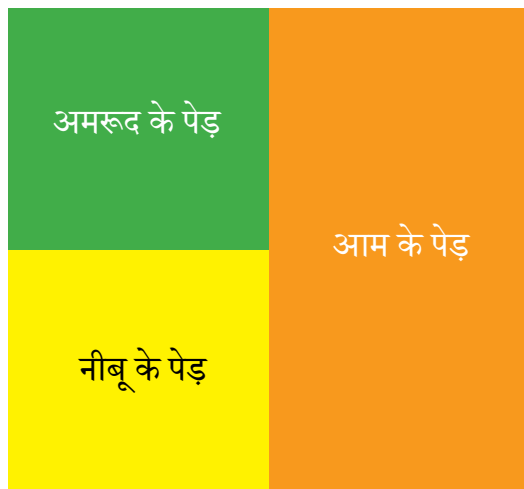
गीता के 6 बोरी गेहूँ मैरी के 5 बोरी गेहूँ



चित्र देखकर बताइए—

1. सबसे ज्यादा सीटें कौन-से दल को मिली हैं?
2. सबसे कम सीटें कौन-से दल को मिली हैं?

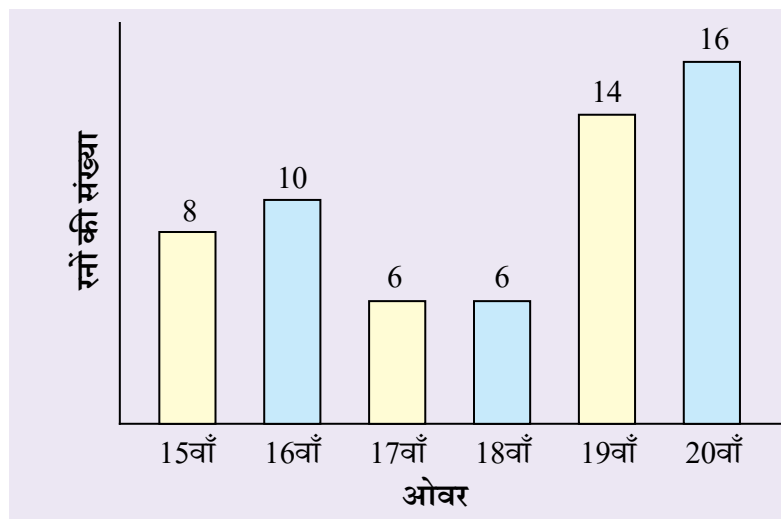
इसी तरह हम अपने आस-पास देखकर भी अन्य जानकारियाँ इकट्ठी करते रहते हैं। गीता ने अपने खेत में फलों के पेड़ भी लगाए हैं—



चित्र देखकर बताइए—

1. आम के पेड़ खेत के _____ भाग में लगे हैं।
2. अमरूद के पेड़ खेत के _____ भाग में लगे हैं।
3. नीबू के पेड़ खेत के _____ भाग में लगे हैं।

गीता टी.वी. पर 20–20 क्रिकेट मैच देख रही है। अंतिम छह ओवरों में बने रनों की संख्या को चित्र में दर्शाया गया है—



चित्र देखकर बताइए—

1. सबसे ज़्यादा रन किस ओवर में बने हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है?
2. किस ओवर में सबसे कम रन बने हैं?
3. 0 रन किस ओवर में बने हैं?
4. 15वें ओवर में कितने रन बने हैं?



मैच देखने के बाद गीता अपने मोबाइल फोन में रिचार्ज कराने एक दुकान पर गई। उसे नीचे दिए गए प्लान में से एक प्लान चुनना था। नीचे दिए गए प्लान में उनकी कीमत और उनकी वैधता दी गई है। कौन-सा रिचार्ज गीता के लिए फ़ायदेमंद रहेगा?

प्लान	₹155	₹179	₹479
वैधता	24 दिन	28 दिन	56 दिन

अगर गीता ने ₹179 का रिचार्ज कराया और उसने दुकानदार को ₹500 का नोट दिया, तो उसे कितने रुपये वापिस मिलेंगे?

गीता ने रिचार्ज 18 मार्च को करवाया और उस प्लान की वैधता 28 दिन थी, तो उसे अगला रिचार्ज कब करवाना होगा?

मार्च

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अप्रैल

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30



मोबाइल की दुनिया

निशा ने बाबा के बैंक खाते को मोबाइल नंबर से जोड़ दिया था। उसने बाबा को फोन पर मोबाइल से बिजली का बिल जमा करना, फ़ोन रिचार्ज करना सिखा दिया था। सभी तरह के बिल बाबा फोन से जमा करते, पैसा उनके खाते से ट्रांसफर हो जाता था। इससे बाबा का दफ़्तरों और दुकानों पर आने-जाने का झंझट खत्म हो गया था। छुट्टियों के बाद निशा शहर चली गई। वह वहाँ पढ़ाई कर रही थी। कभी-कभी वह अपने कॉलेज के फ़ोटो और कभी वीडियो भी भेजती। बाबा उसकी भेजी चीज़ को उत्सुकता से देखते। व्हाट्सऐप पर संदेश



लिखकर अपनी राय भी बताते। पत्रों की जगह अब बाबा उसे ई-मेल किया करते थे। इससे डाक खर्च और समय दोनों की बचत होती थी।

एक दिन निशा ने बाबा को वीडियो कॉल किया। बाबा ने उसे बताया, “अब मैं यू-ट्यूब पर लोकगीत सुनकर ही सोता हूँ। तुझे एक और बात बताऊँ, सारे खबरिया चैनल भी यू-ट्यूब पर दिख जाते हैं।”

निशा ने कहा, “वाह बाबा! आप तो हाइटेक हो गए! अच्छी बात है। अच्छा बाबा, एक बात तो बताओ। कभी किसी ने आपसे आपके एटीएम कार्ड का नंबर तो नहीं पूछा?”

बाबा बोले, “अरे हाँ, पूछा था एक दिन। पर मैंने नहीं बताया। फिर वह एटीएम का पिन भी पूछता और मेरे खाते से सारे पैसे चले जाते। मैं धोखे में नहीं आया।”

निशा बोली, “अच्छा किया बाबा! अब तो आप साइबर ठगों से बचना भी सीख गए।”

“शहर में कहीं आना-जाना हो तो कैब या मोटरसाइकिल बुक कर लिया करना। ज़रूरी किताब मँगानी हो तो आजकल मोबाइल से ही ऑर्डर हो जाती है। कई ऐप चल गए हैं। गूगल पर सर्च करोगी तो सब मिल जाएगा। ई-लाइब्रेरी पर भी किताबें खोजकर पढ़ी जा सकती हैं।” बाबा ने सीख देते हुए बड़ी खुशी महसूस की।

बाबा तो मोबाइल के कुछ ज़्यादा ही जानकार हो गए हैं। सोचते हुए निशा मुस्कुराई।

फिर निशा ने वीडियो कॉल पर ही बाबा को अपना कॉलेज दिखाया। बाबा ने भी निशा को गेहूँ का खेत दिखाया, तालाब दिखाया जिसमें अब पानी काफ़ी कम हो गया था। वहाँ कुरजा और सारस दलदली ज़मीन पर टहल रहे थे।

बाबा को लगा जैसे वे शहर में बेटी के पास ही हैं। निशा को लगा जैसे वह कुछ पल के लिए गाँव के तालाबी खेतों में पहुँच गई है।

— प्रभात



■ बातचीत के लिए—

- प्रश्न 1. निशा ने बाबा को मोबाइल फोन पर क्या-क्या सिखाया?
- प्रश्न 2. बाबा ने निशा को मोबाइल के इस्तेमाल की क्या-क्या सीख दी?
- प्रश्न 3. मोबाइल फोन ने बाबा और निशा के बीच की दूरी कैसे मिटाई? क्या आपको भी मोबाइल के इस्तेमाल से अपने किसी परिचित से दूरी मिटने जैसा अनुभव हुआ है? यदि हाँ, तो सभी के साथ साझा कीजिए।
- प्रश्न 4. मोबाइल फोन पर साइबर ठगी की घटनाएँ सुनने में आती हैं। इससे बचने के लिए हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

■ पढ़िए, बताइए और लिखिए—

- प्रश्न 1. मोबाइल फ़ोन के क्या-क्या लाभ हैं?

- प्रश्न 2. मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल करते समय आप किन बातों का ध्यान रखते हैं?

प्रश्न 3. मोबाइल फ़ोन से किसका लेन-देन किया जा सकता है?
सही जवाब पर सही (✓) का निशान लगाइए—

पैसों का



संदेशों का



तस्वीरों का



इन तीनों का



- आप अपने मोबाइल का इस्तेमाल किस-किस काम के लिए करते हैं? एक सूची बनाइए—

_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

- किसी ऐसे अनुभव के बारे में बताइए जब आपको मोबाइल के कारण किसी काम में सुविधा हुई हो।

■ मोबाइल के कुछ अन्य प्रयोग —

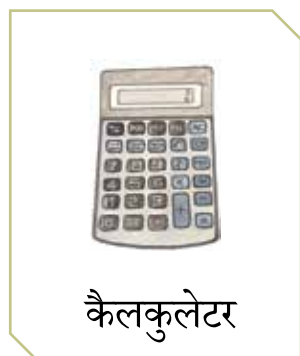
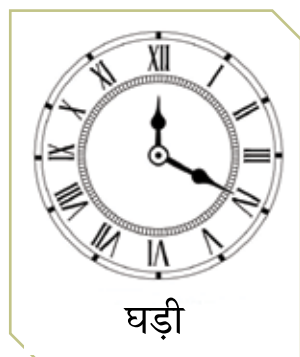
- एस.एम.एस से संदेश भेजा जाता है।
- कैलकुलेटर की मदद से हिसाब कर सकते हैं।
- अलार्म घड़ी सेट कर सकते हैं।
- कैलेंडर देख सकते हैं।
- 'स्टेप वॉक' चेक कर सकते हैं अर्थात् आप कितनी दूर पैदल चलते हैं यह भी जाना जा सकता है।
- मोबाइल फोन के जरिये ऑनलाइन पढ़ाई की जाती है। इसमें कुछ विशेष ऐप्लीकेशन होते हैं जिससे सीधे कक्षा में जुड़ सकते हैं, जैसे— जूम मीटिंग, गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स आदि। इन ऐप्लीकेशन में पहले अपने आपको पंजीकृत करना पड़ता है।
- जी.पी.एस. (लोकेशन) के माध्यम से सही दिशा एवं मार्ग का पता चलता है।
- विभिन्न प्रकार के गेम खेल सकते हैं।
- फ़ेसबुक चला सकते हैं।
- रेडियो सुन सकते हैं।
- ऑडियो यानी आवाज़ रिकॉर्ड कर सकते हैं। गाने गाकर या कहानी सुनाकर वीडियो बना सकते हैं।
- तापमान जाँच सकते हैं।
- आस-पास में होटल, अस्पताल, स्कूल, रेलवे स्टेशन, पार्क आदि का पता लगा सकते हैं।



■ देखिए, पढ़िए और बातचीत कीजिए—

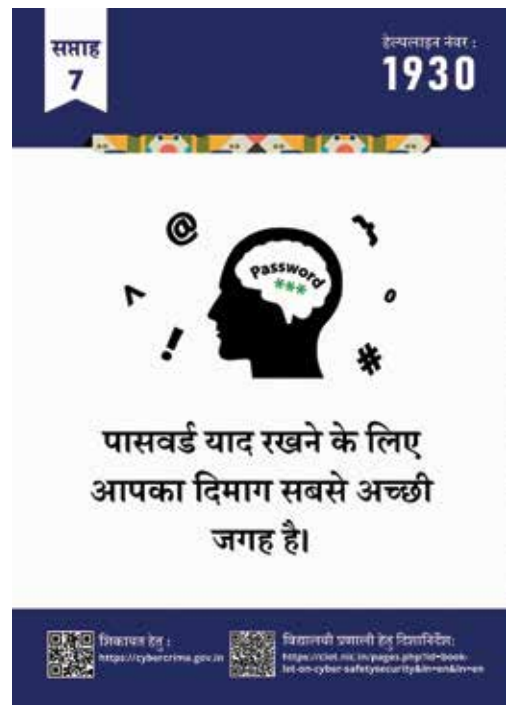
आप अपने मोबाइल फ़ोन में इनमें से किन-किन का उपयोग करते हैं?

सही (✓) का निशान लगाइए—



शिक्षक-निर्देश— सहभागियों के साथ एक-एक करके दिए गए चित्रों की पहचान करवाएँ। उन चित्रों के नीचे लिखे शब्द पढ़वाएँ। उनके इस्तेमाल के बारे में बातचीत करें। हो सकता है कि कुछ सहभागी इनके इस्तेमाल और कामों से परिचित न हों।

■ जानकारी के लिए—



सप्ताह 10

हेल्पलाइन नंबर : 1930



स्पैम संदेशों में उपलब्ध लिंक को न खोलें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in>

बिचालपी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://citel.mil.in/pages.php?tab=book-let-on-cyber-safety&security&link&link=es>

सप्ताह 11

हेल्पलाइन नंबर : 1930



आप जो कुछ भी ऑनलाइन पढ़ते हैं उन सभी पर विश्वास न करें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in>

बिचालपी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://citel.mil.in/pages.php?tab=book-let-on-cyber-safety&security&link&link=es>

सप्ताह 14

हेल्पलाइन नंबर : 1930



व्यक्तिगत तस्वीरें ऑनलाइन साझा करने से पहले दो बार सोचें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in>

बिचालपी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://citel.mil.in/pages.php?tab=book-let-on-cyber-safety&security&link&link=es>

सप्ताह 20

हेल्पलाइन नंबर : 1930



अगर आप किसी साइबर क्राइम के शिकार होते हैं, तो तुरंत रिपोर्ट करें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in>

बिचालपी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://citel.mil.in/pages.php?tab=book-let-on-cyber-safety&security&link&link=es>

सप्ताह 24 हेल्पलाइन नंबर : 1930



अपने मोबाइल उपकरणों को कभी भी अपरिचित व्यक्तियों के साथ साझा न करें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in> विद्यालयी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://ciet.nic.in/pages.php?id=book-let-on-cyber-safety&link=anknmen>

सप्ताह 28 हेल्पलाइन नंबर : 1930



साइबर कानूनों से अवगत रहें और ऑनलाइन रहते हुए उनका पालन करें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in> विद्यालयी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://ciet.nic.in/pages.php?id=book-let-on-cyber-safety&link=anknmen>

सप्ताह 38 हेल्पलाइन नंबर : 1930



इंटरनेट पर कभी भी किसी के साथ व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in> विद्यालयी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://ciet.nic.in/pages.php?id=book-let-on-cyber-safety&link=anknmen>

सप्ताह 43 हेल्पलाइन नंबर : 1930



आपको उपहार देने का वादा करने वाले मुफ्त ऑनलाइन ऑफ़र से सावधान रहें।

शिकायत हेतु : <https://cybercrime.gov.in> विद्यालयी प्रणाली हेतु दिशानिर्देश : <https://ciet.nic.in/pages.php?id=book-let-on-cyber-safety&link=anknmen>

शिक्षक-निर्देश— दिए गए चित्रों के माध्यम से सहभागियों को साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूक करें। सहभागियों के साथ 'नेटिकेट' (इंटरनेट शिष्टाचार) के व्यवहार के बारे में बातचीत करें। इस विषय में और अधिक जानकारी के लिए दिए गए लिंक का भी प्रयोग कर सकते हैं <https://ciet.nic.in/flipbook/200-COPY-Cyber-Safety-Pocket-Book-HINDI-W-3-5inch-X-H-5inch/index.html#page=1>

वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण ङ ढ

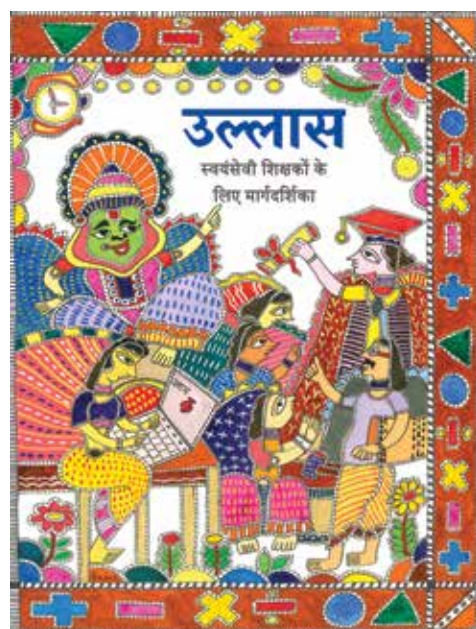
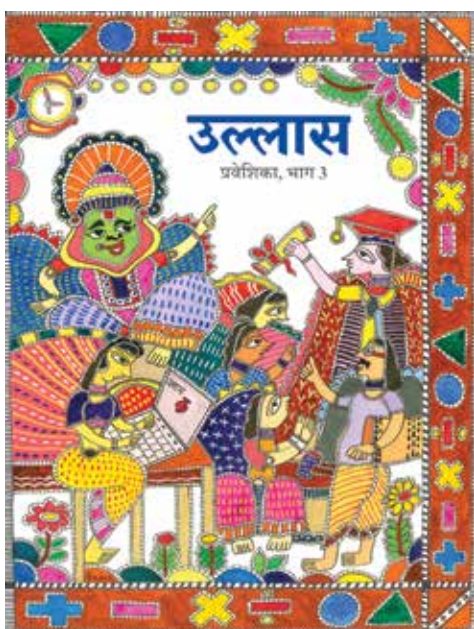
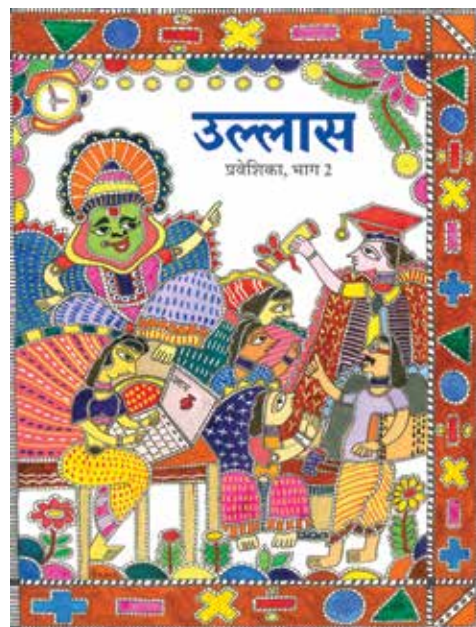
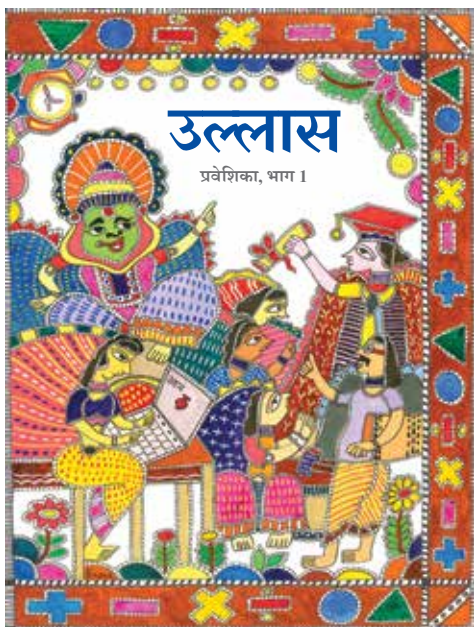
त थ द ध न

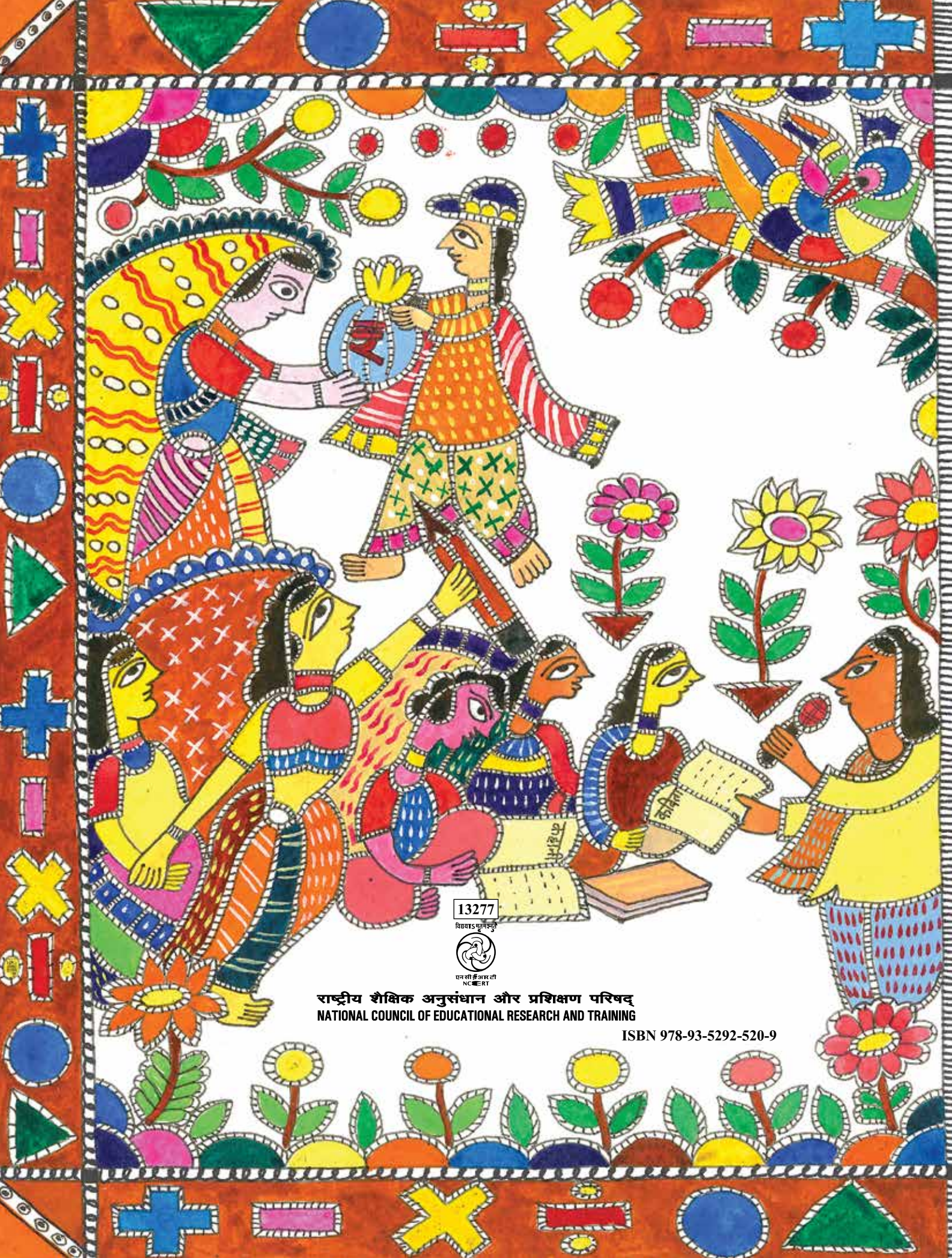
प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ श्र





13277

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-520-9